मार्च (प्रथम) 2021 | ₹ 30.00

चंपक

VISIT…

STOMAFIT®

Tablets & Liquid

SUNCARE

A WHO GMP COMPANY

SURE SAFE SECURE

सुनो जी, दही भल्ला, पापड़ी, गुजिया, पकौड़े बनवा तो लिए हो इतना पकवान! पेट का भी करो थोड़ा ध्यान! कल छुटटी लेके मत कर लेना अपना नुकसान!

खाएँगे, पीयेंगे, खेलेंगे रंग, टेन्शन काहे की जब स्टोमाफिट है संग!

Delicious Orange Taste

हेमोकॉल

बेहतरीन स्वाद

ग्लुकोज़ से भरपूर आयरन टॉनिक

- भूख न लगना
- अनीमिया (शरीर में खून की कमी)
- त्वचा का सफ़ेद दिखना
- जीभ, नाखूनो के अंदर सफेदी।
- कमजोरी एवं बहुत अधिक थकावट
- सांस फूलना व हृदयगति का तेज होना।

उपरोक्त लक्ष्णों में तुरंत इस्तेमाल में लीजिए

हेमोकॉल आपके शरीर में खून की कमी को दूर करता है, इसका ओरेंज फ्लेवर काफ़ी स्वादिष्ट है। इसमें आयरन व फोलिक ऐसिड का भंडार है जो कि कमज़ोरी को आपकी जिंदगी से बाहर कर देता है। पहली खुराक से ही फायदा मिलेगा

Now Available on 1mg

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.

फोन:8447977889/999, 011-46108735, मेल:Info@stomafit.com फ्री होम डिलीवरी 8447977999

चंपक

मार्च (प्रथम) 2021 अंक : 1208

संस्थापक
विश्वनाथ
1917-2002

सुनो कहानी

बरगद के पेड़ का भूत	4
छोटा सा प्रयास	8
एक छोटा सा उपहार	13
शरारती किट्टू	20
कोविड वेपन	26
बगिया के फूल	32
तबाही का मतलब है, डोडो	46

मुखपृष्ठ

महिला दिवस पर जश्न मनाएं और महिलाओं के महत्त्व पर प्रकाश डालें. हमें मां, दादीमां, बहन और उन की सहेलियों का सम्मान और उन से प्रेम करना चाहिए.

मन बहलाओ

सुंदर रंग भरो	7
देखो हंस न देना	12
बताओ तो जानें	18
हिस्से को जोड़ें	19
रास्ता बताओ	23
बिंदु मिलाओ	28
बलूत ढूंढ़ें	29
स्मार्ट	30
जोड़ा ढूंढ़ें	37
चित्र पूरा करें	38
याददाश्त बढ़ाएं	39
अंतर बताओ	44
गलत को बताएं	45

चित्र कथाएं

डमरू और स्टीव खरगोश	11
चीकू	24
दादाजी और विश्व वन्यजीव दिवस	40

विशेष पृष्ठ

मजेदार विज्ञान	17
नन्ही कलम से	42

संपादक व प्रकाशक ● परेश नाथ

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. फोन : 41398888, 23529557-62.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीपुल्स पोपो प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा - 121003 से मुद्रित. संपादक : परेश नाथ.
Sold on the condition that jurisdiction for all disputes concerning sale, subscription and published matter will be in courts/forums/tribunals at Delhi.

चंपक में प्रकाशित कथा साहित्य में पात्र, स्थान, घटनाएं व संवाद काल्पनिक हैं और किसी से उन की समानता संयोग मात्र है. प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगे पत्र लिफाफे लिखना चंपक अनिवार्य है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी. प्रेषित रचनाओं की सुरक्षा/प्रकाशन के लिए कार्यालय का कोई उत्तरदायित्व नहीं है.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए, 'चीकू' शीर्षक भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है. वार्षिक मूल्य केवल क्रेडिट कार्ड/चैक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'चंपक' के नाम से ई-8, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055 को दें. फोन. सी.सी.ओ. नहीं. एक प्रति रु. 30.00 (बिना सीडी के),
वार्षिक रु. 576, दो वर्ष रु. 1050. (भारत में)

ग्राहक बनने और वितरण के बारे में विस्तृत जानकारी संपर्क करें :
दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055
फोन : 91-11-41398888. एक्स. नं. 119, 221, 264.
मोबाइल/एसएमएस/वाट्सएप : 08588843408
ईमेल : subscription @ delhipress.in

दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
बी-3, दत्ताल उद्योग भवन, नेगांव क्रॉस रोड, दत्ताल मुंबई-400031. फोन : 91-22-24122661, 43473050.

● रचनाओं व सवालों के लिए ईमेल: article.hindi @ delhipress.in
● निमंत्रणों व प्रेस सूचनाओं के लिए ईमेल: invites.pressrelease @ delhipress.biz
● संपादक को पत्रों के लिए ईमेल: editor @ delhipress. biz
● ग्राहक विभाग के लिए ईमेल: subscription @ delhipress.in

अपनी कहानी, कविता, ड्राइंग्स तथा फोटोज़ वहां भी भेज सकते हैं :
writetochampak@delhipress.in या एसएमएस करें : 09599587613
www. facebook.com/ChampakMagazine और https://www.youtube.com/ user/ ChampakSciQ

बरगद के पेड़ का भूत

कहानी ● हेमा मदान

चीका खरगोश वापस अपने घर लौट आई थी, लेकिन उस के दिल की धड़कन तेज हो गई थी. अंधेरा घिर गया था और उसे अंधेरे से डर लगता था. उस ने यह निश्चय कर रखा था कि अंधेरा होने के बाद कहीं भी नहीं जाएगी, लेकिन आज उसे अपने दोस्तों के साथ खेलते हुए यह एहसास नहीं हो पाया कि कितना समय बीत चुका था. उस के आसपास अजीबोगरीब शोर ने उसे परेशान कर रहा था. अब वह अपने घर के बहुत पास आ चुकी थी, लेकिन उसे अभी भी बड़े बरगद के पेड़ के पास से गुजरना था.

चीका को बड़े बरगद के पेड़ के पास से गुजरने में बहुत डर लगता था, क्योंकि उस ने अपने दोस्तों से इस के बारे में बहुत सी डरावनी कहानियां सुनी थीं. इस पेड़ को भूतों का घर कहा जाता था. उस के दोस्त मैनी नेवला ने उसे एक बार एक कहानी बताई थी कि जिस में भूत के साथ उस की मुठभेड़

हो गई थी. जब परछाई ने उसे पकड़ने की कोशिश की तो उसे अपनी जान बचाने के लिए भागना पड़ा था. जब वह आगे बढ़ी और पेड़ के करीब पहुंच गई, तो चीका घबराहट महसूस करने लगी. अंधेरा होने के बाद वहां वह कभी भी अकेले नहीं गई थी, क्योंकि वह जानती थी कि वहां भूतों का बसेरा था.

हवा भी चलनी शुरू हो गई थी. पत्तों की सरसराहट की आवाज वहां के हालात को और भी ज्यादा डरावना बना रही थी. जैसे ही उस ने एक शाखा के टूटने की आवाज सुनी, वह उछल पड़ी. उस की मोबाइल की बैटरी भी खत्म हो गई थी और वहां कोई उपाय नहीं था कि किसी को कौल कर कह पाती कि कोई उसे वहां आ कर घर ले जाए. वह तेजी से दौड़ने लगी, क्योंकि ठंड भी बढ़ने लगी थी. अब उसे अजीबोगरीब फुसफुसाने की आवाज भी सुनाई देने लगी थी. वह दौड़ने लगी, लेकिन उसे उस के रास्ते पर एक परछाई द्वारा रोक दिया गया. वह डर से कांप गई और उस के पैर नहीं हिल रहे थे. उस की आंखों से आंसू लुढ़कने लगे. वह अपने दिल की तेज धड़कने सुन सकती थी. अचानक उस ने अपने सिर पर कोई चीज उतरते हुए महसूस की. वह चिल्लाई और दौड़ने लगी. उस ने अपनी पीठ पर भी किसी चीज को रेंगते हुए महसूस किया. चीका पूरी ताकत लगा कर तेजी से भागी. हंसी की आवाज जो उस का पीछा कर रही थी, उस ने उस की रूह तक को कंपकंपा दिया था.

वह तभी रुकी जब उस ने अपने घर के सामने जंबो हाथी को खड़ा देखा. जंबो चीका का पड़ोसी और दोस्त था, जो हमेशा उस का खयाल रखता था. जंबो ने उसे भागते हुए देख लिया था और उस के चेहरे के डर ने उसे परेशान कर दिया था. जंबो ने चिंतित हो कर चीका से पूछा, ''क्या बात है, चीका? तुम भयभीत दिखाई दे रही हो. क्या सबकुछ ठीक तो है न?''

''नहीं, मैं ठीक नहीं हूं, जंबो. भूत मेरा पीछे कर रहे थे और एक ने तो मेरे सिर पर बैठने की कोशिश भी की थी. मैं खुशकिस्मत हूं कि उन से दूर भाग गई हूं,'' चीका ने उत्तर दिया.

''चीका, मुझे मत बताओ उन भूतों की कहानियों के बारे में, जो चारों ओर फैली हुई हैं और जिन पर तुम विश्वास करती हो. अंधविश्वासी लोगों ने उन्हें बनाया है,'' जंबो हाथी ने कहा.

''नहीं जंबो, मैं ने एक परछाई को अपनी आंखों से देखा है और मैं ने फुसफुसाने की आवाज सुनीं. ये कहानियां बिलकुल ही सच हैं,'' चीका ने तर्क दिया.

''चीका, मुझे वहां ले चलो और दिखाओ कि तुम ने क्या देखा था. मैं हमेशा के लिए तुम्हारे दिमाग से इस डर को बाहर निकालना चाहता हूं,'' जंबो ने सुझाव दिया.

''मैं वहां फिर से जाऊं, इस का कोई मतलब ही नहीं बनता है,'' चीका ने मना कर दिया.

''चीका, मैं ने हमेशा तुम्हारा खयाल रखा है और मैं चाहता हूं कि तुम मुझ पर विश्वास करो. मुझे वहां ले चलो,'' जंबो ने उस पर जोर डाला.

आखिरकार चीका जंबो को वहां ले जाने के लिए मान गई, जहां पर उस ने परछाई देखी थी. जल्दी ही वे वहां पहुंच गए थे और चीका फिर से फुसफुसाने की आवाज को सुन रही थी. वह जंबो के पीछे छिप गई. जल्दी ही वहां पर परछाई दिखी और चीका ने जंबो को उस की ओर इशारा किया. जंबो ने उस परछाई को देखा और हंस पड़ा. चीका हैरान थी और उस ने जंबो से पूछा, ''तुम हंस क्यों रहे हो, जंबो? क्या तुम्हें उस परछाई से डर नहीं लगता है?''

जंबो उस पर मुसकराया और बोला, ''थोड़ा देर इंतजार करो, चलो, मैं तुम्हें कुछ दिखाता हूं,'' जंबो पेड़ के पास गया और अपनी सूंड़ से उस ने पेड़ की एक डाल से कपड़े का एक टुकड़ा खींचा. उस ने चीका को बुलाया और इस टुकड़े को उसे दिखाया. ''तुम ने देखा, चीका? यह कुछ भी नहीं है, सिवा इस कपड़े की परछाई के, जिसे तुम ने देखा था. यह कपड़ा एक शाखा में अटक गया था और जब हवा बहती तो यह भी उड़ने लगता था,'' जंबो ने कहा.

''लेकिन फुसफुसाहट की आवाज क्या है?'' चीका ने पूछा.

''इस पेड़ पर छिपकली का एक परिवार रहता है और यही उन के बड़बड़ाने का शोर है,'' जंबो ने कहा. ''और यह मैं थी जो पहले तुम पर गिर गई थी और जब तुम डर से तेजी से भागने लगी थी तो हम खूब जोर से हंसने लगे थे,'' एक छोटी सी छिपकली ने पेड़ से नीचे आते हुए कहा.

''ओह, तो मैं ने जो हंसी की आवाज सुनी थी, उस का कारण यही था,'' और चीका हंस पड़ी. जंबो भी हंसा और बोला, ''हां, चीका, मैं खुश हूं कि मैं ने तुम्हारे दिमाग से इस डर को निकाल दिया है. अब तुम अपने दोस्तों को भी इस डर के रहस्य से उबारने के लिए ऐसा ही कर सकती हो.''

इस हंसीमजाक में अब छिपकली का परिवार भी उन के साथ शामिल हो गया था. ●

सुंदर रंग भरो

RB भारत का सुप्रसिद्ध एवं सर्वश्रेष्ठ...

तोता®

रंग व गुलाल

बचपन के रंगों से सजी होली,
फिर से खेलो यह रंग बिरंगी होली।

तन रंग दे, मन रंग दे

www.holicolour.com Toll Free No : 1800 121 7107

रंग भरें, अपना नाम व पता लिखें, पोस्ट द्वारा भेजें या फोटो खींचें और 9412154532 पर व्हाट्सऐप करें. चुनिंदा चित्रों को तोता गुलाल के गिफ्ट हैंपर भेजे जाएंगे.

RADHA KISHAN BISHAN DASS RANG RASAYAN PVT. LTD. Tota Rang Factory, Guriha Wala Pech, Hathras-204101, UP

छोटा सा प्रयास

कहानी ● कुसुम अग्रवाल

पता नहीं आज स्कूल में क्या बताया गया कि तान्या और ध्रुव अन्य दिनों की अपेक्षा आज जल्दीजल्दी घर की ओर कदम बढ़ा रहे थे. शायद वे शीघ्र घर पहुंच कर अपनी योजनाओं को क्रियान्वित करना चाहते थे.

घर पहुंच कर रोजाना की तरह इधरउधर बस्ता और यूनिफौर्म फेंकने के बजाय वे दोनों अपने कमरे में गए और उन को उचित स्थान पर रख दिया.

''ध्रुव, जाओ, तुम जल्दी से पास वाले स्टोर से कुछ कैंडल्स और एक छोटा सा केक ले आओ. मैं रसोई में जाती हूं. हमें मम्मी के आने से पहले ही सारी तैयारी करनी है.'' तान्या ने ध्रुव से कहा.

''ठीक है,'' यह कह कर ध्रुव केक और कैंडल लाने चला गया. तान्या रसोई घर में जा कर अलमारी खोल कर बैठ गई. वह चिप्स और पौपकौर्न ढूंढ रही थी. शीघ्र ही उस ने दोनों चीजें ढूंढ़ निकाली. चिप्स और पौपकौर्न को माइक्रोवेव में रोस्ट कर लिया. इतना तो वह जानती थी, क्योंकि वह रोज अपनी मम्मी को यह काम करते हुए देखती थी. इतनी देर में ध्रुव लौट आया था.

''दीदी, स्टोर बंद है. मैं कैंडल्स और केक नहीं ला पाया हूं,'' उस ने मायूस हो कर तान्या से कहा.

एक क्षण को तान्या भी मायूस हो गई, फिर अचानक उसे एक आइडिया आया और वह चहकी, ''ओरियो बिस्किट केक में बिस्किट केक बनाऊंगी. हमारी टीचर ने कुकिंग क्लास में सिखाया था कि किस तरह घर पर ही आसानी से बिस्किट केक बनाया जा सकता है,'' उस ने ध्रुव से खुशी से कहा.

''हां, दीदी मैं ने भी खाया था. बहुत स्वादिष्ठ था,'' ध्रुव ने खुश हो कर कहा.

''बिस्किट तो घर में जरूर होंगे,'' यह कह कर

तान्या ने अलमारी खोली. खुशकिस्मती से ओरियो बिस्किट के दो पैकेट रखे थे. तान्या झटपट तैयारी में लग गई. शीघ्र ही एक छोटा सा केक तैयार हो गया. फ्रिज में रंगबिरंगी जेम्स रखी थीं. उन्होंने वे केक पर सजा दीं. अब केक और भी सुंदर लगने लगा.

''अब कैंडल्स का क्या करें?'' दोनों सोच में पड़ गए.

''मेरे पास इस का भी एक उपाय है,'' तान्या ने कहा. घर में दीवाली के पुराने दीपक तो रखे ही होंगे. मम्मी हमेशा रखती हैं. बस, उन से काम चल जाएगा.

''पर पुराने दीपक तो गंदेचिपचिपे होंगे. हम उन का इस्तेमाल कैसे करेंगे,'' ध्रुव ने नाक चढ़ाते हुए कहा.

''तुम उन्हें ले कर तो आओ.''

तान्या के कहने पर ध्रुव पांचसात दीपक ले आया. तान्या ने उन दीपकों को रगड़रगड़ कर धोया तथा फिर कपड़े से पोंछ कर सुखा दिया.

तब ध्रुव बोला, ''दीदी, मैं इन दीयों पर कलर कर दूं?''

''अरे, मैं ने भी यही सोचा था. वाह, तुम तो मेरे आइडिया की कौपी कर रहे हो,'' तान्या ने हंसते हुए कहा.

ध्रुव जल्दी से अपना कलर बौक्स ले आया. फिर दोनों ने मिल कर उन दीयों पर तरहतरह के रंग कर दिए. फिर उन्हीं रंगों से डिजाइन भी बना दी. अब वह पुराने दीपक भी बहुत सुंदर लग रहे थे. तान्या ने दीपकों में बत्तियां भी लगा दीं तथा उन में तेल भी भर दिया.

उन्होंने डाइनिंग टेबल के बीचोंबीच केक रख कर चारों तरफ दीये सजा दिए. एक प्लेट में चिप्स तथा दूसरी ओर पौपकौर्न रख दिए.

अभी उन्हें एक काम और करना था. एक चार्ट पेपर पर कुछ लिख कर सामने की दीवार पर लगाना था. अब दोनों भाईबहन उस काम में लग गए तथा जल्दी ही उन्होंने वह चार्ट पेपर तैयार कर लिया. वह काफी सुंदर लग रहा था. उन्होंने सभी किनारों को फूलपत्तियों से सजाया था. उन्होंने चार्ट के बीचोंबीच एक औरत बनाई तथा उस के आसपास अन्य कई

औरतें बनाईं. पूरे चार्ट को सुंदर ग्लिटर्स से सजा कर उस पर अपनी मनचाही बातें भी लिख दी थीं. उन्होंने वह चार्ट सामने की दीवार पर लगा दिया. तान्या पुरानी रंगबिरंगी राखियां ले आई तथा उस ने उस चार्ट के चारों ओर उन राखियों से सजावट कर दी.

ठीक 6 बजे उन्होंने सभी दीये जलाए और फिर किसी के आने का इंतजार कर रहे थे.

कुछ ही देर बाद कुछ आवाजें आईं. कोई घर का मुख्य दरवाजा अपनी चाभी से खोल रहा था.

''जरूर ये मम्मी होंगी. पर ये इतनी आवाजें किस की हैं?'' वे हैरान थे. तान्या ने खिड़की से झांक कर देखा. बाहर मम्मी ही थीं. परंतु आज वे कुछ सहेलियों के साथ थीं. तान्या और ध्रुव ने छिप कर देखा, मम्मी अपनी सहेलियों के साथ ड्राइंगरूम में बैठ गईं और फिर शुरू हो गईं सब की बड़बड़ाहट.

तान्या और ध्रुव ने उन्हें डाइनिंगरूम में आमंत्रित किया. यह देख कर मम्मी हैरान रह गईं.

तान्या और ध्रुव के कहने पर मम्मी अपनी सहेलियों के साथ डाइनिंग टेबल के पास आईं.

वहां आ कर उन्होंने देखा सामने दीवार पर लगे चार्ट पर लिखा है, 'हैप्पी वूमेंस डे.' उस के साथ और भी बहुत कुछ डाइनिंग टेबल पर जलते हुए दीये, उन के बीच में केक तथा अन्य नाश्ते का सामान देख कर मम्मी आश्चर्यचकित रह गईं और बोलीं, ''तो तुम्हें पता था?''

इस पर ध्रुव बोला, ''हां मम्मी, आज हमारी क्लास टीचर ने बताया था कि 8 मार्च को इंटरनैशनल वूमेन डे होता है,'' आप हमारे जीवन की सब से महत्त्वपूर्ण महिला हैं. आप हमारे लिए सबकुछ करती हैं.

मम्मी ने आगे बढ़ कर दोनों बच्चों को गले लगा लिया. ख़ुशी के मारे उन की आंखों में आंसू आ गए. सभी ने महिला दिवस मनाया और ख़ुश हुए. ●

डमरू और स्टीव खरगोश

कहानी ● शिवेश श्रीवास्तव

डमरू ने स्टीव खरगोश के यहां काम करना शुरू किया.

मालिक, जब आप अपने फोन को देख रहे होते हैं तो इतना ज्यादा क्यों हंसते हैं?

डमरू, मैं कुछ मजेदार वीडियो देख रहा हूं. मैं पूरे दिन इन्हें देख कर हंस सकता हूं.

मुझे भी वीडियो दिखाइए. मैं भी हंसना चाहता हूं.

नही, यह मेरा फोन है, इसलिए इस का इस्तेमाल सिर्फ मैं ही कर सकता हूं. अगर मैं ने तुम्हें इस का इस्तेमाल करते हुए देख लिया तो मैं तुम्हें काम से निकाल दूंगा.

ठीक है, मालिक. मैं इसे नहीं छूऊंगा.

एक दिन स्टीव डमरू के साथ कार से मार्केट गया.

SONAL

डमरू, मुझे मौल से कुछ सामान खरीदना है. क्या तुम कार में मेरा इंतजार करोगे?

हां, मालिक.

डमरू, मैं यहां डैशबोर्ड पर अपना फोन भूल गया था. वह कहां है?

अरे, उसे तो अभीअभी भालू ले गया है.

क्या कहा, तुम ने उसे रोका नहीं?

मालिक, आप ने मुझे चेताया था कि मैं आप के फोन को न छुऊं. इसलिए मैं कुछ भी नहीं कर सकता था.

क्या? मैं ने अभीअभी अपना कीमती फोन खो दिया. भाग जाओ यहां से. तुम अपना मुंह मुझे फिर कभी मत दिखाना.

मालिक, भालू आप का वौलेट भी ले गया है.

क्या? उस में तो मेरे बहुत सारे रुपए थे. बेवकूफ, तुम ने मुझे लुटवा दिया.

अगर आप ने मुझे अपना फोन इस्तेमाल करने दिया होता, तो आज आप को इस तरह रोना नहीं पड़ता.

देखो हंस न देना

सहाना (चार्मी से) : उस वायरस का नाम क्या है जिस ने काउ यानी गाय को प्रभावित किया है?
चार्मी : मुझे नहीं पता.
सहाना : काउ-इड19

चार्मी छावड़ा, 12 वर्ष
वडोदरा

कौआ (गौरैया से) : 15 टौफियों को 5 बच्चों में कैसे बांटोगे?
गौरैया : बहुत आसान है. हरेक बच्चे को एक टौफी दे दो और बाकी को जेब में रख लो.

अथर्व गुप्ता, 9 वर्ष
लखनऊ

मोहित (रोहित से) : स्टेडियम इतना कूल क्यों है?
रोहित : मुझे नहीं पता.
मोहित : क्योंकि इस के बहुत सारे फैंस हैं.

आरव भास्कर, 9 वर्ष
दिल्ली

बेटा (मम्मी से) : मम्मी, मैं उस लड़की से शादी करूंगा जो मेरी बूढ़ी मम्मी की देखभाल करेगी.
मम्मी : तुम्हें किस ने मेरे बारे में बूढ़ी कहा.

विदुषी हर्ष, 12 वर्ष
जयपुर

सीटू (किट्टू से) : कौन से 'की' यानी चावी का इस्तेमाल कर के तुम कोई भी लौकर नहीं खोल सकते हो?

हाहाहा हाहाहा हीहीहीं हीहीहीं

चिंटू (पिंटू से) : एक ऐंट यानी चींटी की पसंदीदा दवाई क्या है?
पिंटू : ऐंटीबायोटिक.

विद्या झावर, 8 वर्ष
सोनीपत

किट्टू : मौंकी.

आदित्य मुंदड़ा, 11 वर्ष
किशनगढ़

मीकू (चीकू से) : कौन से गेट को हम खोल नहीं सकते हैं?
चीकू : मुझे नहीं पता.
मीकू : कौलगेट.

अक्षत भास्कर, 12 वर्ष
दिल्ली

आर्यन (नयन से) : फुटबौल का खिलाड़ी कूल यानी ठंडा क्यों था?
नयन : क्योंकि उस के बहुत सारे फैंस (प्रशंसक) थे.

मोहिशा गुप्ता, 10 वर्ष
अहमदाबाद

राजू ने अपने घर में फर्श पर एक लंबी लाइन खींची और इस पर बैठने के बाद पढ़ना शुरू कर दिया.

राजू की मम्मी : तुम इस लाइन के ऊपर क्यों बैठे हुए हो?
राजू : मम्मी, कृपया मुझे डिस्टर्ब न करो. मैं औनलाइन पढ़ाई कर रहा हूं.

सामन्यु सिंह, 8 वर्ष, नोएडा

टीचर (छात्र से) : एक तरफ पैसा और दूसरी तरफ अक्ल हो, तो तुम क्या चुनोगे?
छात्र : पैसा.
टीचर : गलत, में अक्ल चुनती.
छात्र : आप सही कह रही हैं, जिस के पास जिस चीज की कमी होती है, वह वही चुनेगा न.

अश्विनी कुमार, 14 वर्ष, दिल्ली

कोमल (सुमन से) : एक विच यानी चुड़ैल अपने खाने के और्डर में क्या मांगेगी?
सुमन : सैंडविच चाहिए.

आशवि टी बाघ, 10 वर्ष, आनंद

कुमुद (टूटू से) : हम एक बैंड में बहुत सारे सर्कल क्यों देखते हैं?
टूटू : क्योंकि वे रौकऐंड रौल कर रहे होते हैं.

आर्यन, 6 वर्ष, रजौली, बिहार

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:
चंपक, दिल्ली प्रेस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई - 400031
ईमेल : writetochampak@delhipress.in
और SMS: 9619587613
औनलाइन विजिट करें :
www.facebook.com/ChampakMagazine
https://www.youtube.com/ChampakSciQ

एक छोटा सा उपहार

कहानी ● डा. के रानी

मार्च का महीना था. अभी तक पहाड़ों में सर्दी खत्म नहीं हुई थी. सुबह से बारिश हो रही थी और दीपक बिस्तर में दुबक कर गहरी नींद में सो रहा था.

''दीपक, उठो. तुम्हें स्कूल के लिए देर हो जाएगी,'' मां ने कहा.

''मां, आज बारिश हो रही है. मैं स्कूल नहीं जाना चाहता.''

''ऐसा मत कहो बेटा, बारिश का तुम्हारी पढ़ाई से क्या लेनादेना? पहाड़ों में तो अकसर बारिश होती रहती है,'' मां ने धीरे से उस के सिर पर प्यार से हाथ फेरा तो उसे मजबूरन उठना पड़ा.

वह सीधे रसोई में गया, जहां दादीमां चूल्हे पर रोटी बना रही थीं. दीपक ने जल्दी से अपना चेहरा धोया, कपड़े पहने और किचन में आ कर दूध व रोटी खाने लगा.

''दादीमां, आज इतनी ठंड है आप कब उठीं.''

''मैं तो हर दिन सूर्योदय से पहले उठती हूं.''

''दादीमां, इस ठंड में वास्तव में काम करना बहुत कठिन होता है.''

''बेटा, यदि हम काम नहीं करेंगे तो खाएंगे क्या? चंपा कितनी मेहनत करती है. उसे बाहर का सारा काम संभालना पड़ता है. इस परिवार में कमाने वाला कोई और नहीं है. तेरी मां कुछ पैसे कमाने के लिए पूरे दिन खेतों में काम करती है ताकि घर आसानी से चल सके.''

''लेकिन दादीमां, आप भी तो काम करती हो, आप पूरा घर संभालती हो.

''यदि मैं मदद न करूं तो चंपा अकेले सारा काम

कैसे करेगी?'' दादीमां ने पूछा. अपना दूध और रोटी खत्म करते हुए दीपक ने स्कूल जाने के लिए अपनी पुरानी छतरी निकाली. चंपा आंगन में खड़ी थी. उस ने कहा, ''आओ, बेटा, मैं तुम्हें स्कूल छोड़ कर आती हूं.''

''मैं अपने आप चले जाऊंगा मां.''

''इस मौसम में तुम्हें अकेले भेजते हुए डर लगता है,'' कहते हुए चंपा दीपक को स्कूल ले गई. आधे घंटे चलने के बाद वे स्कूल पहुंचे. उस दिन क्लास में बहुत कम बच्चे आए थे. फिर भी जो पढ़ने वाले बच्चे थे वे सभी स्कूल आए थे.

दोपहर बाद बारिश रुक गई थी. दीपक अपने दोस्त रमेश के साथ घर लौटा.

''दादी, मां कहां हैं?''

''खेतों में काम कर रही होगी. थोड़ी देर पहले खाना खा कर वह तुरंत चली गई. बता रही थी कि आज काम ज्यादा है,'' दादीमां बोलीं. वे बाहर आंगन में बरतन धो रही थीं.

दीपक की दो बहनें पास में ही खेल रही थीं, वह भी उन के साथ खेलने में मस्त हो गया. कुछ देर बाद चंपा वापस आ गई.

दादीमां ने कहा, ''चंपा, कम से कम दो मिनट आराम से बैठ कर चाय तो पी लो, सुबह से थक गई होगी.''

''मुझे जलाने के लिए लकड़ी लानी है, उस के बाद ही मैं आराम करूंगी,'' इतना कह कर वह जाने के लिए मुड़ी तो दीपक बोला, ''मां, मैं भी आप के साथ चलूंगा.''

''शाम के समय बच्चों को बाहर नहीं निकलना चाहिए. तू अपनी बहनों और बाबूजी को देख. मैं अभी लकड़ियां ले कर आती हूं,'' चंपा पूरे एक घंटे बाद घर लौटीं. तब तक अंधेरा हो चुका था.

रसोई में लकड़ियां रखने के बाद दादीमां उन के पास आईं और उन्हें एक कप चाय देते हुए बोलीं, ''चंपा, बैठो और चाय पीओ. बाकी काम बाद में करना.''

चंपा ने चाय पी और उस के बाद गाय का दूध निकालने चली गई.

दीपक ने जब से होश संभाला हमेशा अपनी मां और और दादीमां को यों ही पूरे दिन काम करते पाया. उन के परिवार में कोई कमाने वाला नहीं था. दादी ने बताया था कि उन के दादाजी की मृत्यु बहुत पहले हो गई थी. दादीमां ने किसी तरह रातदिन मेहनत कर दो बूआओं और उस के पापा को पालपोस कर बड़ा किया था.

उस के पापा पैसे कमाने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे थे. एक दिन वे लकड़ी लेने पेड़ पर चढ़े और अचानक नीचे गिरे तो फिर कभी खड़े नहीं हो पाए.

वे बिस्तर तक ही सीमित रहे. परिवार का पूरा बोझ अब उस की मां और दादीमां पर आ गया. मां ने किसी तरह हिम्मत बांध कर फिर से अपनी गृहस्थी को चलाने का बीड़ा उठाया और रातदिन मेहनत कर बिस्तर पर पड़े अपने पति और बच्चों का पेट पाल रही थीं.

उन्हें देख कर दीपक सोचता, 'एक दिन वह बड़ा आदमी बनेगा और अपनी मां, दादीमां, पिताजी व बहनों की सारी परेशानी दूर कर देगा.' वह चाहता था कि मां के काम में हाथ बंटाए, लेकिन मां उसे पढ़ने के अलावा कुछ नहीं करने देतीं.

अगले दिन मौसम ठीक था और सभी छात्र क्लास में आए थे. टीचर ने छात्रों से कहा, ''बच्चो, क्या तुम जानते हो कि कल 8 मार्च को दुनिया भर में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है.''

''यह क्या होता है?'' सब बच्चों ने एकसाथ पूछा.

''इस दिन महिलाओं ने पहली बार अपने हक की आवाज उठाई थी. कल सब को इस पर एक निबंध लिख कर लाना है.'' उस के बाद टीचर ने उन्हें इस दिन के बारे में कुछ जरूरी बातें समझाईं.

दोपहर को स्कूल की छुट्टी के बाद सभी बच्चे अपने घर आ गए. दीपक को समझ नहीं आ रहा था कि वह अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के बारे में क्या लिखे? दूसरों के घरों में तो बताने वाले भी थे, लेकिन दीपक किस से पूछता? उसे इस बारे में कुछ नहीं पता था.

शाम को वह चुपचाप इसी बारे में सोच रहा था. चंपा ने उसे उदास देखा तो पूछा, ''क्या हुआ दीपक? चुपचाप क्यों बैठा हुआ है?''

''टीचर ने हमें एक निबंध लिखने को दिया है. मुझे समझ नहीं आ रहा है कि क्या लिखूं? मां, क्या आप जानती हो. कल अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस है?''

''अरे, हमारे लिए तो हर दिन महिला दिवस है. यदि हम एक दिन काम नहीं करेंगे तो हमें अगले दिन भूखा ही रहना पड़ेगा.''

मां के इन शब्दों ने दीपक के दिल को छलनी कर दिया. उस ने कलम और कागज उठाया और लिखना शुरू कर दिया. उस ने कागज पर महसूस की गई हर चीज को लिख दिया और राहत महसूस की. खाना खा कर उस ने पिताजी और मां से बातें कीं और फिर दादीमां से कहानी सुन कर सो गया.

दूसरे दिन स्कूल में टीचर ने सब बच्चों की कौपी इकट्ठा की और एकएक कर उन्हें पढ़ने लगे. ज्यादातर बच्चों ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर निबंध कहीं से कौपी किए थे. दीपक का निबंध अलग था जिसे पढ़ कर टीचर भावुक हो गए थे.

टीचर ने पूरी क्लास के सामने उस का निबंध पढ़ा. ''मुझे नहीं पता अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस क्या होता है? मां से पूछा तो उन्होंने बताया हम तो रोज ही इस दिन को मनाते हैं और यही सच है. मेरी दादीमां

और मां सुबह से शाम तक काम पर लगी रहती हैं. उन के लिए आवाज उठाने वाला कोई नहीं है, लेकिन फिर भी वे अपने परिवार के लिए दिनरात संघर्ष करती रहती हैं. हर दिन वे एक नई आशा के साथ उठती हैं और परिवार का भरणपोषण करने व पिताजी की देखभाल के बाद शांति से सो जाती हैं. मैं ने उन दोनों को हमेशा संघर्ष करते ही देखा है. क्या हुआ अगर वे सड़क पर अपनी आवाज उठाने नहीं उतर पातीं? अपने घर के लिए तो वे हमेशा सजग रहती हैं. मेरी दादीमां और मां से बढ़ कर कोई भी महिला संघर्ष नहीं कर सकती. वे अपने लिए नहीं हम सब के लिए जीती हैं.''

दीपक का निबंध पढ़ कर टीचर ने उस की कौपी पूरे स्कूल के बच्चों को दिखाई. यह देख कर कि एक छोटा सा बच्चा अपनी दादीमां और मां के संघर्षों के प्रति कितना जागरूक और दयालु है, सब हैरान रह गए. वे दुनिया में महिला दिवस पर क्या कुछ हो रहा है, उस के बारे में कुछ नहीं जानतीं, लेकिन अपने परिवार की ढाल बन कर सही माने में सशक्त महिला की भूमिका निभा रही थीं.

टीचर ने सोच लिया कि वे इस परिवार की मदद करने के लिए जिला प्रशासन से गुहार लगाएंगे, ताकि उन्हें भी सरकारी योजनाओं का फायदा मिल सके. उन्होंने एक लिफाफा उठा कर उस में एक हजार रुपए रखे और उसे दीपक को थमा कर कहा, ''इसे मेरी तरफ से अपनी दादीमां को दे देना. यह मेरी तरफ से आज के दिन पर उन के लिए छोटा सा उपहार है.''

उपहार पा कर दीपक बहुत खुश हुआ. उस ने घर आ कर दादीमां को लिफाफा थमाया. रुपए देख कर दादीमां ने पूछा, ''ये तुम्हें किस ने दिया?''

''दादीमां, मैं ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सब से अच्छा निबंध लिखा था. इसलिए मेरे टीचर ने मुझे इनाम के तौर पर आप को यह देने के लिए कहा.''

''यह तुम ने मुझे क्यों दे दिए?''

''आज अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस है, दादीमां.''

''इन रुपयों से मुझे अपने बेटे की दवा लेने में मदद मिलेगी और चंपा पर बोझ कम होगा,'' दादीमां ने दिल से टीचर को धन्यवाद देते हुए कहा.

''मैं यह खबर मां को सुनाता हूं,'' कह कर दीपक मां से मिलने खेतों की तरफ दौड़ा.

मजेदार विज्ञान

छाया की खोज

पता करें कि पारदर्शी वस्तुओं में छाया होती है.

आप को चाहिए :

● टौर्च ● किताब ● गिलास

ऐसा करें :

1. अंधेरे कमरे में टेबल पर किताब को खड़ा कर के रखें और उस पर टौर्च चमकाएं यानी रोशनी फेकें.

2. अब टेबल पर गिलास रखें और इस पर टौर्च की रोशनी डालें.

देखें :

जब आप किताब के ऊपर टौर्च की रोशनी डालते हैं, तो पीछे की ओर दीवार पर किताब का एक गहरा काला आकार बनता है. लेकिन जब आप गिलास पर टौर्च की रोशनी डालते हैं, तो इस की छाया एक अलग किस्म की होती है.

सोचें :

किताब और गिलास की छाया अलगअलग किस्म की क्यों है?

छाया का निर्माण होता है, क्योंकि लाइट यानी रोशनी एक सीधी रेखा में यात्रा करती है. जब लाइट की किरणों के रास्ते में एक वस्तु को रख दिया जाता है तो वह लाइट को स्वयं से हो कर जाने देने में बाधा उत्पन्न करता है और छाया निर्मित होती है.

हमारे इस प्रयोग के अनुसार किताब एक गहरी काली छाया बनाती है, क्योंकि वह प्रकाश को खुद से हो कर जाने से रोकती है. ऐसी वस्तु जो स्वयं से हो कर प्रकाश को नहीं जाने देती, अपारदर्शी कहलाती है.

लेकिन जब एक गिलास के माध्यम से प्रकाश को गुजारा जाता है, तो यह एक हलकी छाया बनाता है. ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि गिलास पूर्णतया यानी पूरी तरह से पारदर्शी नहीं है. जब प्रकाश गिलास के सतह से टकराता है, तो कुछ किरणें मुड़ जाती हैं जिसे अपवर्तन कहा जाता है. कुछ किरणें सीधी रेखा में गमन करती हैं और एक छाया बनाती है. इसी वजह से गिलास की छाया किताब की छाया से अलग होती है.

पता करें :

फ्रौस्टेड यानी पाले से ढके गिलास से हम देख क्यों नहीं पाते हैं?

फ्रौस्टेड गिलास अपारदर्शी नहीं है क्योंकि प्रकाश अभी भी इस से गुजरता है. इस तरह की वस्तुओं को पारभासी कहा जाता है. हालांकि फ्रौस्टेड गिलास की सतह सामान्य गिलास जैसी नहीं है, जब लाइट इस से हो कर गुजरती है, यह फ्रौस्ट यानी पाला लाइट की दिशा बदल देती है. इसी वजह से पारभासी गिलास से दिखने वाली वस्तुएं अस्पष्ट दिखाई देती हैं.

बताओ तो जानें

1. थोड़ा सा मेरा इस्तेमाल करो
   तुम्हारे हाथ साफ रखूंगा
   इस्तेमाल अगर न किया
   कीटाणु लौट आएंगे.

2. मैं तैर सकता हूं
   पर मेरे गिल नहीं हैं
   रंग मेरा काला है
   टेढेमेढ़े पैर हैं मेरे.

3. जितना मुझ से निकालोगे
   चौड़ा और बड़ा होता जाऊंगा
   भरते चले गए तो मैं
   सिमट कर गायब हो जाऊंगा.

4. मेरी एक रीढ़ है
   पर हड्डियां हैं नहीं
   बहुत को हूं मैं पसंद
   बहुत से हैं जो करे नापसंद.

देखें तुम कितना जानते हो

1. सब से पहले वायसराय की पदवी को भारत के गवर्नर जनरल के कार्यालय से कब जोड़ा गया था?
   (क) 1848
   (ख) 1856
   (ग) 1858
   (घ) 1862

2. निम्नलिखित में से किस का इस्तेमाल पैंसिल में किया जाता है?
   (क) ग्रेफाइट
   (ख) सिलिकोन
   (ग) चारकोल
   (घ) फौसफोरस

3. किस वर्ष ईमेल एड्रैस में इस्तेमाल होने वाले '@' को चुना गया था?
   (क) 1976
   (ख) 1972
   (ग) 1980
   (घ) 1984

4. पोटैशियम नाइट्रेट का इस्तेमाल निम्न में से किस में किया जाता है?
   (क) दवाई में
   (ख) नमक में
   (ग) ग्लास में
   (घ) फर्टिलाइजर में

उत्तर (बताओ तो जानें) : 1– सैनिटाइजर, 2–केकड़ा, 3–पेंसिल, 4–फिटकार.
उत्तर (देखें कितना जानते हो?) : 1–ग, 2–क, 3–ख, 4–घ.

हिस्से को जोड़ें

मछली के खोए हुए हिस्से जोड़ें.

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

शरारती किट्टू

कहानी ● मेघा कदम

सैम्मी गौरैया अपने पहले औनलाइन एग्जाम को ले कर बहुत बेचैन थी. उसे अपनी टीचर मिस ट्वीटी याद आ रही थी जो कह रही थीं, ''बहुविकल्पी प्रश्न होंगे. इसलिए अपनी संकल्पना यानी अपने काम को ठीक से लेना. सिर्फ उत्तर याद कर लेने से कोई लाभ नहीं होगा.''

सैम्मी उन के व्याख्यान यानी क्लास के दौरान बहुत ही एकाग्रचित रहती थी.

उस की औनलाइन क्लास का टाइम हो रहा था तभी उसे दरवाजे पर एक दस्तक सुनाई दी. सैम्मी ने उस ओर देखा, किट्टू कौआ भाग रहा था. किट्टू बहुत शरारती था. वह हमेशा उस के दरवाजे पर दस्तक दे कर सैम्मी को परेशान करता था और तेजी से भाग जाया करता था.

सैम्मी ने किट्टू को नजरअंदाज कर दिया. ''सैम्मी, क्या तुम मुझे सुन पा रही हो?'' तीसरी बार मिस ट्वीटी ने पूछा.

''नहीं मैम, कृपया प्रतीक्षा कीजिए,'' सैम्मी ने जवाब दिया. खराब नैटवर्क कनैक्शन के कारण वह ठीक से क्लास अटैंड नहीं कर पा रही थी. इसलिए बेहतर जुड़ाव के लिए सैम्मी खिड़की के पास बैठ गई. उस ने खुद को लैपटौप के साथ सहज किया और व्याख्यान में भाग लेने लगी.

उस ने फिर से दरवाजे पर एक दस्तक सुनी. ''ऐसा करना कृपया बंद करो, किट्टू. मुझे पढ़ाई करनी है और तुम मुझे परेशान कर रहे हो,'' सैम्मी गुस्से से बोली.

''यह तो मेरे लिए बहुत मजे की बात है, सैम्मी. देखा, जब तुम गुस्सा होती हो तो किस तरह से तुम्हारी नाक लाल हो जाती है. ऐसा लगता है जैसे नाक पर चेरी हो,'' ठहाके लगा कर हंसते हुए किट्टू ने कहा.

सैम्मी ने दरवाजा जोर से बंद कर दिया. ''ओह, अब मैं स्कूल कैसे जाऊं,'' सैम्मी ने गहरी सांस ली.

किट्टू ने जब फिर अपनी शरारत दोहराई, तो सैम्मी चिल्ला उठी, ''किट्टू, मैं अब तुम से तंग आ चुकी हूं. ठहरो, जरा इंतजार कर लो, मैं इस जगह को हमेशा के लिए छोड़ दूंगी. मैं अब और ज्यादा यहां नहीं रह सकूंगी.''

''ठीक है, अलविदा, सैम्मी. तुम कब जा रही हो?'' किट्टू ने जोर से हंसते हुए कहा.

अगले दिन किट्टू ने अपनी शरारत को

फिर से दोहराने का निर्णय किया, उस ने देखा, दरवाजा बंद था यानी दरवाजे पर ताला लटका था.

''आखिर वह कहां चली गई है? हो सकता है, वह शाम तक लौट आएगी,'' वह बड़बड़ाया.

लेकिन सैम्मी एक सप्ताह बाद भी नहीं लौटी, ''अरे, सैम्मी कहां है?'' पीकू तोते ने पूछा.

''वह अपने घर पर नहीं है. उस के घर पर ताला लगा हुआ है,'' कक्कू ने जवाब दिया.

''यहां से जाने से पहले उस ने हम सभी से मुलाकात क्यों नहीं की? अलविदा भी क्यों नहीं कहा?'' पीकू ने पूछा.

''किट्टू की वजह से. उस ने उसे बहुत परेशान किया था. अब वह हमेशा के लिए चली गई है,'' टीटू तितली ने दृढ़ता से कहा.

''यह तुम क्या कह रही हो? सैम्मी मेरी सब से अच्छी दोस्त है. वह मुझे विदाई दिए बिना नहीं जा सकती है,'' कक्कू ने कहा.

किट्टू ने उन की बातचीत सुनी और अपने व्यवहार के लिए खुद को दोषी महसूस किया. 'क्या वह वास्तव में यहां से हमेशा के लिए चली गई है? मैं ने उसे काफी तकलीफ पहुंचाई है. मुझे माफ कर दो, सैम्मी. कृपया जल्दी से लौट आओ,' किट्टू ने खुद से फुसफुसा कर कहा.

''अरे, नहीं,'' किट्टू को कुछ याद आया. ''मैं ने सैम्मी को अपने दोस्तों को यह कहते हुए सुना था कि उस के पास एक असाइनमैंट पूरा करने के लिए था. मिस ट्वीटी इस के लिए एक औनलाइन प्रजैंटेशन देने जा रही थी. मिस ट्वीटी को अपनी सख्ती के लिए जाना जाता है.''

''हो सकता है, इसी वजह से सैम्मी उस दिन पहले से ज्यादा चिढ़ गई थी. वह एक बहुत ही अनुशासित

छात्रा थी और वह सभी शिक्षकों की पसंदीदा भी थी. वह काफी मेहनती थी.

''मेरी गड़बड़ी के कारण ध्यान देने से हो सकता है उसे डांट पड़ सकती थी. हो सकता है कि मिस ट्वीटी के द्वारा उसे अन्य छात्रों के सामने अपमानित भी किया जा सकता था.

''मैं माफी चाहता हूं, सैम्मी. मैं जानता हूं कि इस तरह का व्यवहार तुम्हें गहरी चोट पहुंचा सकता है. तुम ने इन सभी बातों को अपने दिल से लगा ली है. मुझे अपनी सीमा पता होनी चाहिए थी. मजे लेना तो ठीक है, लेकिन अन्य लोगों की भावनाओं की कीमत पर लेना ठीक नहीं है.''

किट्टू काफी विचारशील था. इस से पहले कभी वह इतना विचारशील नहीं हुआ था.

कई दिन गुजर गए, लेकिन सैम्मी वापस नहीं आई.

किट्टू खुद को इस के लिए कोसता रहा.

लेकिन एक खुशनुमा दिन किट्टू ने सैम्मी को अपने दोस्तों, पीकू, कक्कू और टीटू के साथ खेलते हुए देखा. उस ने राहत की सांस ली.

''अरे, सैम्मी, तुम इतने दिनों से कहां थी?'' उस ने पूछा.

''मैं राजस्थान अपने चाचा के यहां गई थी. मेरे पापा का वहां पर एक महत्त्वपूर्ण काम था, इसलिए हम उन के साथ गए थे.''

''वाह, यह तो बहुत ही रोमांचक है.''

''हां, और औनलाइन क्लासेस के लिए बहुतबहुत धन्यवाद, जिस में हम कहीं से भी उपस्थित हो सकते हैं,'' सैम्मी ने खुश हो कर उत्तर दिया.

''ओह, तो तुम मेरी वजह से नहीं गई थी? मैं ने सुना था कि तुम हमेशा के लिए चली गई थी,'' किट्टू ने घबराते हुए पूछा.

''ऐसा तुम से किस ने कहा?'' सैम्मी ने उत्सुकता से पूछा. सभी ने टीटू की तरफ देखना शुरू किया. वह जल्दी से उड़ गई, क्योंकि हर कोई उसे गुस्से से घूर रहा था.

सैम्मी ठहाके लगा कर हंसने लगी. ''अरे, किट्टू. मैं तुम्हारी वजह से क्यों जाऊंगी? मैं कभी भी तुम पर गुस्सा नहीं थी. हालांकि तुम ने मुझे बहुत परेशान किया था, फिर भी मैं सफलता की उड़ान के साथ यहां आ गई.''

''अरे वाह, बधाई हो, सैम्मी,'' गर्व से किट्टू ने कहा.

''मेरे यहां पर बहुत सारे प्यारेप्यारे दोस्त हैं. मैं कभी भी दूर नहीं जाऊंगी, सिर्फ इसलिए कि तुम ने मुझे परेशान किया था, ऐसा कभी नहीं होगा,'' सैम्मी ने जवाब दिया.

''लेकिन फिर भी मुझे खेद है, सैम्मी. इस घटना ने मेरी आंखें खोल दी हैं. मुझे सबक सिखाने के लिए बहुतबहुत धन्यवाद, हालांकि यह मुझे अनजाने में ही मिली है,'' किट्टू ने कहा.

''ठीक है, किट्टू. अब सबकुछ भूल जाओ. आओ, लुकाछिपी खेलते हैं.''

''लुकाछिपी?'' किट्टू ने पूछा.

''हां, चिंता न करो. तुम मुझे जल्दी ही ढूंढ़ लोगे. मैं हमेशा के लिए नहीं छिपूंगी,'' सैम्मी ने शरारती लहजे में कहा और सभी दोस्त उस के साथ हंसने लगे. किट्टू भी उन की इस हंसी में शामिल हो गया था. ●

रास्ता बताओ

गोलपोस्ट तक पहुंचने में बौल की मदद करें.

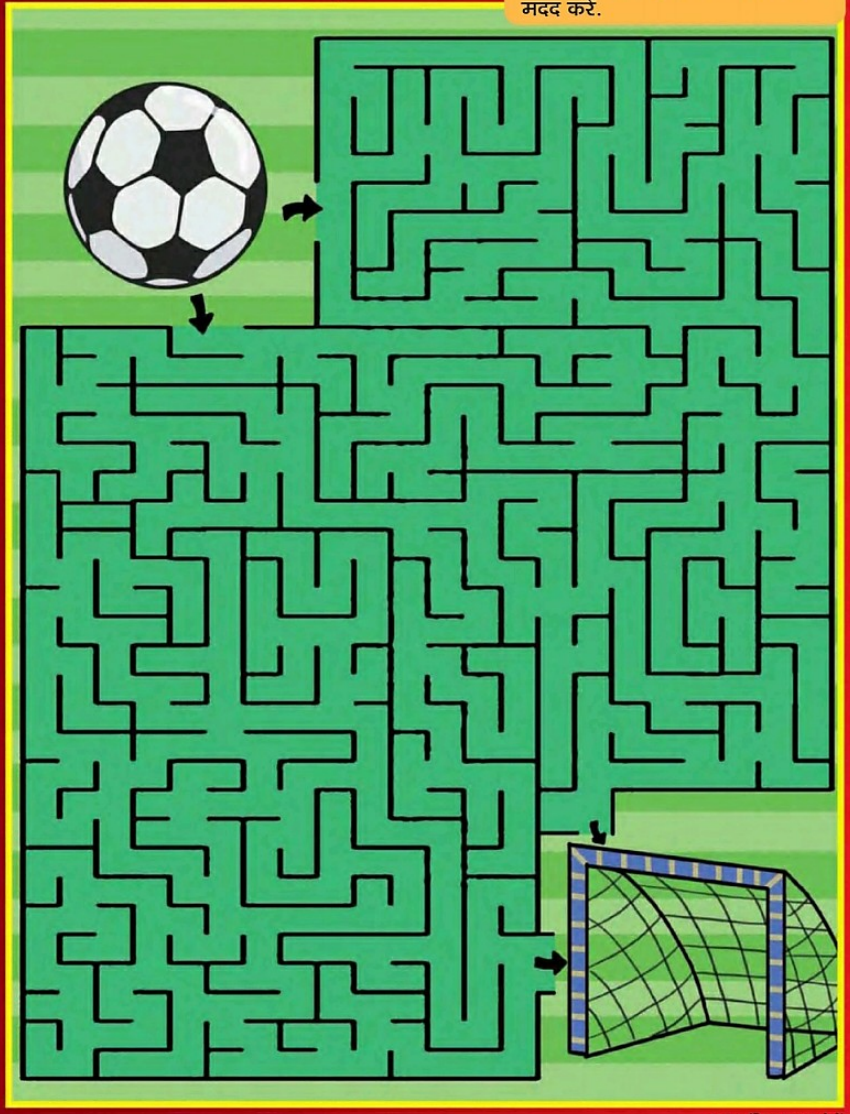

उत्तर: अंतिम पृष्ठ पर देखें.

चीकू

चित्रकथा : दास

चीकू और मीकू दीवार से टिक कर बैठे थे.

आज मौसम बहुत ही खुशनुमा है. मुझे गाना गाने की इच्छा हो रही है.

अरे मीकू, आज तुम बहुत ही खुश मूड में दिख रहे हो.

मीकू एक धुन गुनगुनाने लगा.

सीइइ...इइ. सी.इइ...इइ...

जैकी दीवार की दूसरी ओर आराम कर रहा था.

कौन गुनगुना रहा है? मुझे देखना चाहिए.

जैकी ने दीवार के ऊपर से झांक कर देखा.

वाह, मेरी क्या किस्मत है. न केवल एक बल्कि दोदो शिकार गुनगुनाते हुए मुझे आमंत्रित कर रहे हैं.

हो, हो, हो. मैं भी अच्छी तरह गुनगुना सकता हूं.

जैकी, भागो, मीकू.

तुम मुझ से कितने दूर भाग कर जाओगे?

चीकू, चलो, इस झाड़ी के पीछे, छिप जाते हैं.

दोनों ही छिप गए. तभी एक सांप (कोबरा) उन की ओर मुड़ा.
आ...हा...मेरे ठीक सामने दो शिकार हैं. निश्चय ही आज का दिन मेरे लिए सब से अच्छा है.
अरे नहीं, यह तो बिलकुल कहावत जैसी है, ''फ्राइंग पैन से कूदा और आग में तल गया.
अब हम कहां जाएंगे?
हिलना मत. अभी यहीं रहते हैं.
वे कहां गायब हो गए?
वाह, वे इस झाड़ी के पीछे छिपे बैठे हैं. मैं उन्हें सुन सकता हूं.
जैकी ने ऊंची छलांग लगाई और कोबरा के सामने गिरा.
वाह, एक और शिकार.
अरे, यह मैं ने क्या कर दिया? मैं तो सीधे मौत के मुंह में आ कर उतरा हूं.
मुझे एक आकर्षक धुन बजानी होगी ताकि इस कोबरा को दूर भगा सकूं.
जैकी धुन बजाने में लगा हुआ था.
मीकू, यह एक बढ़िया मौका है, यहां से भागने का. चलो, भागो.
हां, लेकिन जैकी के साथ क्या होगा? सांप के कान नहीं होते हैं. कोबरा उस की धुन कैसे सुनेगा?

कोविड वेपन

कहानी ● प्राजक्ता देशपांडे

''पापा, क्या आप को पता है कि हम सब को जल्दी ही इंजैक्शन लगने वाले हैं. मेरा एक दोस्त बता रहा था,'' औफिस से पापा को घर आते ही आर्यन ने बताया.

''हां बेटा, यह कोविड-19 वैक्सीन है, जिस महामारी से दुनिया साल भर से लड़ रही है, अब उस का खात्मा होने वाला है,'' पापा ने उस का बैग रखते हुए कहा.

''पर यह कोविड़-19 वैक्सीन क्या होती है?'' 10 साल के आर्यन की उत्सुकता बढ़ती जा रही थी.

''बेटा, हमारे शरीर में एक प्रतिरक्षा प्रणाली यानी इम्यून सिस्टम होता है, जिस की अपनी पूरी आर्मी होती है. इस के सोल्जर्स हमारे शरीर को किसी भी बाहरी वायरस के हमले से बचाने के लिए तैयार रहते हैं. कई बार हमारा शरीर एंटी बौडीज नहीं बना पाता, तब इन्हें वैक्सीन के रूप में लगाया जाता है,'' पापा आर्यन को समझा रहे थे.

''हां, मुझे याद है, जब बचपन में मुझे आप इंजैक्शन लगाने के लिए ले जाते थे,'' आर्यन सिर खुजाते हुए बोला.

''बिलकुल, बच्चों को 15-16 साल तक अलगअलग बीमारियों से बचने के लिए वैक्सीन लगाई जाती है. अब ड्रग्स रैगुलेटर बोर्ड ने इंगलैंड में औक्सफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा बनाई गई कोविशील्ड नाम की पहली कोविड-19 वैक्सीन को मंजूरी दी है, जिसे हमारे देश में ही विकसित किया गया है. अब पूरे देश में इसे लगाने का काम शुरू हो चुका है,'' पापा ने बताया.

''लेकिन यह वैक्सीन कैसे काम करती है?'' आर्यन के सवाल पर पापा ने बताया, ''कोरोना वायरस की इमेज बिलकुल स्पाइक बौल जैसी दिखती है, तुम ने कई बार देखा भी होगा. वैज्ञानिकों ने वायरस की सतह से स्पाइक प्रोटीन या जींस ले कर उसे वायरस में डाल कर वैक्सीन बनाई. जब यह शरीर की कोशिकाओं में प्रवेश करती है, तो तेजी से वायरस की एंटी बौडीज बनती है, जो कोरोना वायरस के हमले से हमें बचाती है.''

''मेरा दोस्त राज बता रहा था कि पहले इसे

कोरोना वारियर्स यानी डाक्टर, नर्स आदि व फ्रंटलाइन वर्कर्स पुलिसकर्मी, सफाईकर्मी, सीनियर सिटीजंस को लगाया जाएगा. बाद में अन्य लोगों को. क्या ऐसा ही है पापा?'' आर्यन ने पूछा.

जब वैक्सीन हमारे के कोशिकाओं में प्रवेश करेगी तो यह तेजी से ऐंटीबौडिज का निर्माण करेगी जो हमें कोरोनावायरस से बचाएगा,'' आर्यन के पापा ने कहा.

''ओके, तो बस एक बार इंजैक्शन लगाते ही कोरोना भाग जाएगा,'' आर्यन की आवाज में खुशी झलक रही थी.

''हां, डाक्टर्स की निगरानी में इसे 28 दिन के भीतर दो बार लगाया जाएगा,'' पापा ने बेटे की शंका दूर की.

''मतलब हम सब को दो बार इंजैक्शन लगाने पड़ेंगे,'' आर्यन रोनी सी सूरत बनाते हुए बोला.

''अरे, अभी से घबराने की बिलकुल जरूरत नहीं है. तुम्हारा नंबर आने में अभी वक्त है, डरपोक कहीं के,'' मम्मी जो दोनों की बातें काफी देर से सुन रही थीं, आर्यन के बालों को सहलाते हुए बोलीं.

''फिर यह सब हमारी सुरक्षा के लिए ही तो है, '' पापा ने आगे कहा.

''हम्म, समझ गया. मम्मी मैं थोड़ी देर में आता हूं,'' आर्यन मास्क लगा कर साइकिल निकालते हुए बोला.

''अरे, अचानक कहां चल दिए?''
पापा ने पूछा.

''पापा, कोरोना वेपन के बारे में दोस्तों को बताना जो है,'' पूरे जोश में साइकिल दौड़ाते हुए आर्यन निकल पड़ा.

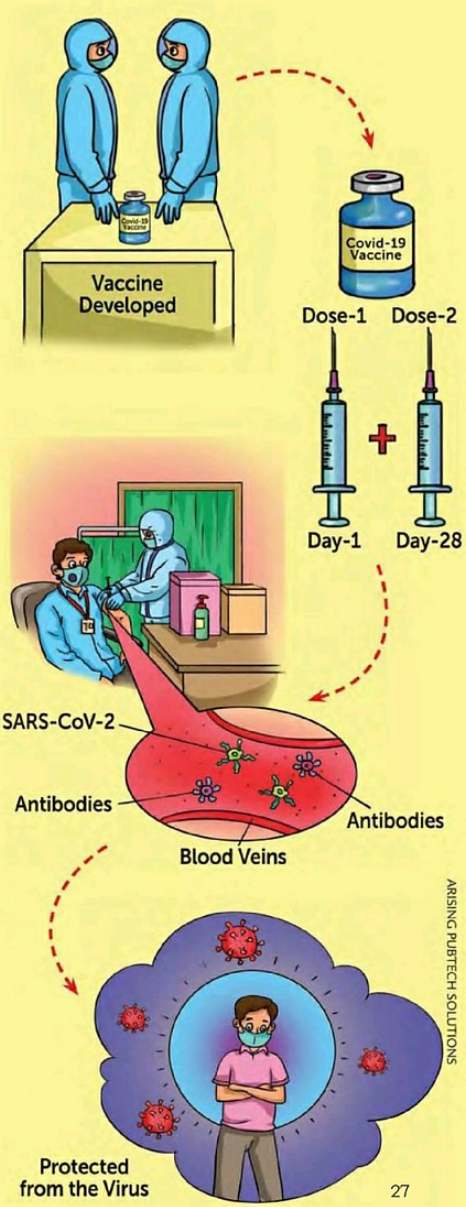

बिंदु मिलाओ

अंकों के अनुसार बिंदुओं को मिलाएं और चित्र पूरा करें.

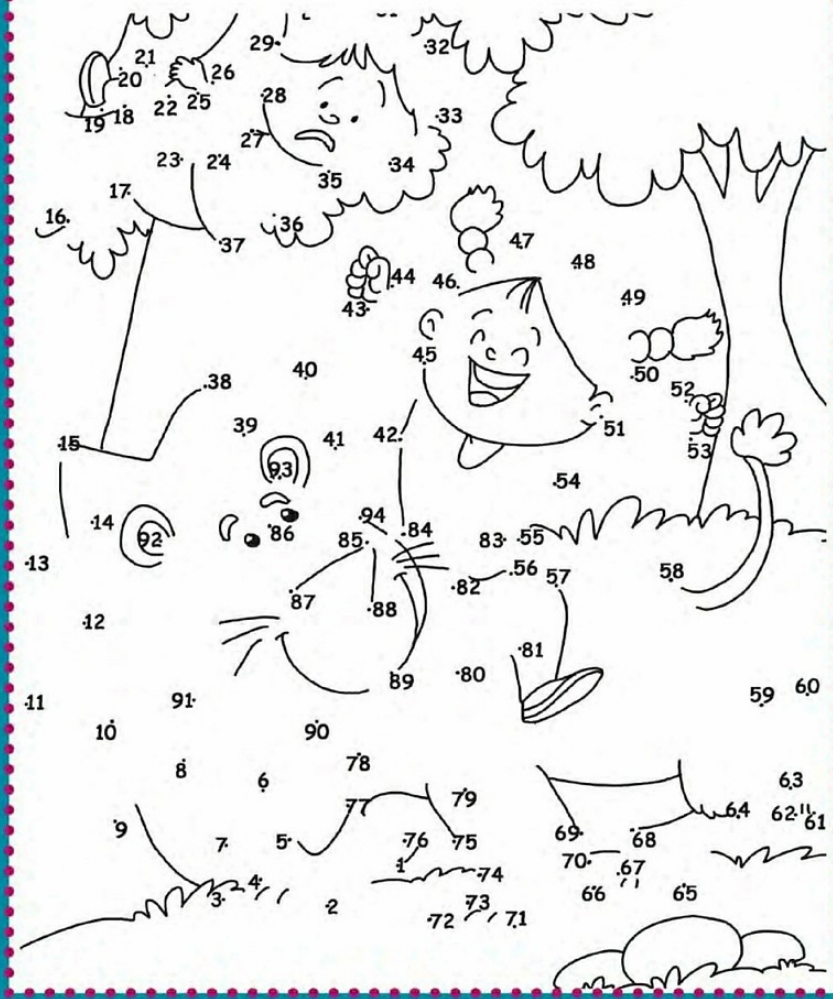

बलूत ढूंढ़ें

क्या आप ऐसा बलूत ढूंढ़ सकते हैं जो हर गिलहरी से 20 कम है?

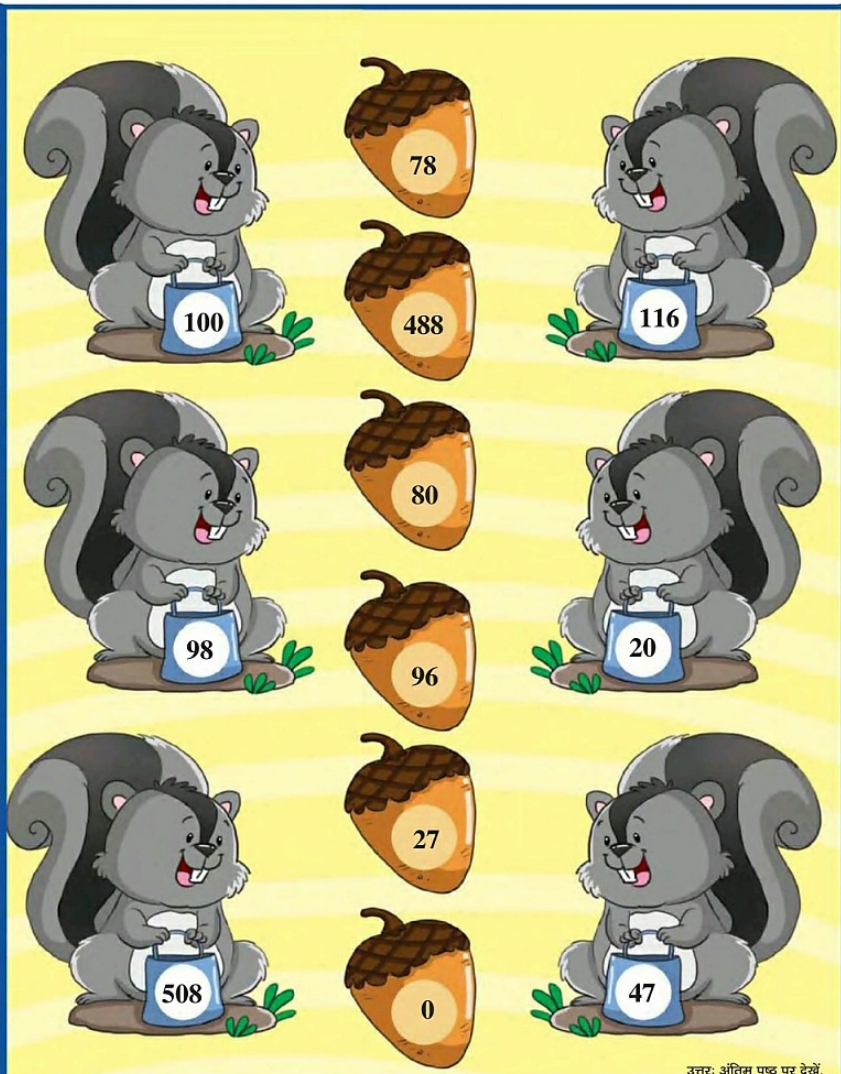

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

वाल हैंगिंग

देविका मेनन

स्मार्ट

पुराने बैंगल्स यानी चूड़ियों और धागे का इस्तेमाल करते हुए एक खूबसूरत सा बटरफ्लाई वाल हैंगिंग बनाएं.

आप को चाहिए : पुराने बैंगल्स, रंगीन पेपर, धागे, कैंची, स्केल, पैंसिल, पुशपिन.

ऐसे बनाएं :

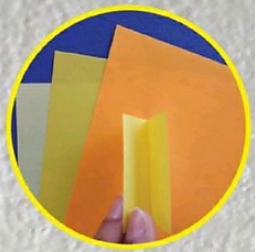

1. रंगीन पेपर का इस्तेमाल करते हुए एक वर्ग यानी स्क्वायर काट लें. इसे आधे से मोड़ें.

2. जैसा चित्र में दिखाया गया है, इस पर बटरफ्लाई का एक आधा चित्र बनाएं.

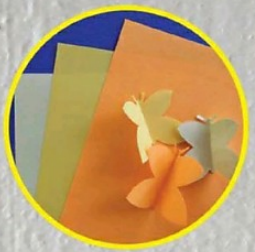

3. बटरफ्लाई प्राप्त करने के लिए बनाए गए आउट लाइन के साथ सावधानी से काट लें. इसी तरह कुछ और काट लें.

4. पुशपिन का इस्तेमाल करते हुए बटरफ्लाई के ऊपरी और निचले हिस्से पर 2 छेद बना लें.

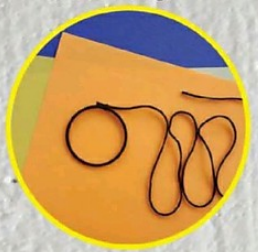

5. बैंगल के एक किनारे पर धागे को बांध लें.

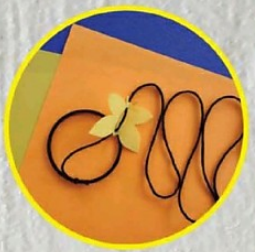

6. बटरफ्लाई में बनाए गए छेद में धागे के दूसरे छोर को डाल दें.

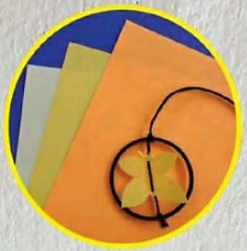

7. अब इसे बैंगल के दूसरे किनारे यानी विपरीत किनारे से बांध दें.

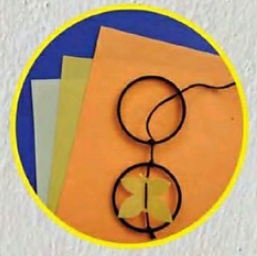

8. एक अन्य बैंगल को उठाएं और इस पर भी धागे को बांधें.

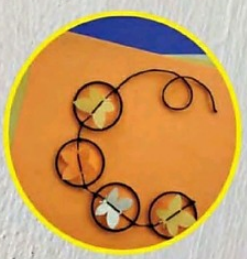

9. सभी बटरफ्लाई के साथ उपरोक्त कार्य को दोहराएं.

अब आप का वाल हैंगिंग बन कर तैयार है.

अपने घर पर इसे स्वयं ही बनाने की कोशिश करें. हमें अपनी प्रविष्टि writetochampak@delhipress.in या एक फोटो खींच कर +91 9619587613 पर भेज दें.

बगिया के फूल

कहानी ● नीलम राकेश

गणित की क्लास अभीअभी समाप्त हुई थी. दूसरी टीचर अभी क्लास में नहीं आई थी. पूरी क्लास बच्चों के शोर से गूंज रही थी. लगता था जैसे ढेर सारी चिड़ियां एक कमरे में बंद कर दी गई हैं. तभी क्लास टीचर ने कक्षा में प्रवेश किया. बच्चे हड़बड़ा कर अपनीअपनी जगह आ गए. टीचर के पीछेपीछे प्रिंसिपल मैम भी क्लास में चली आईं. उन के साथ एक गोलमटोल सा प्यारा बच्चा भी था, जिस के कंधे पर मैम हाथ रखे हुए थीं.

''गुडमौर्निंग मैम,'' सभी बच्चों ने एकसाथ कहा.

बच्चे बिना किसी शोरशराबे के बैठ गए. हैरान हो कर सब प्रिंसिपल मैम को देख रहे थे. ऐसा बहुत कम होता था जब मैम इस तरह उन की क्लास में गई हों.

प्रिंसिपल रीटा मैम ने सब बच्चों को सरसरी निगाह से देखा और बोलीं, ''बच्चो, आज मैं आप के नए साथी से आप का परिचय कराने के लिए आई हूं,'' क्लास में एकदम सन्नाटा छा गया.

रीटा मैम आगे बोलीं, ''यह प्रकाश है, आप का नया दोस्त. हमारे स्कूल में आज ही इस का एडमिशन हुआ है. ये जिस स्कूल में पढ़ रहा था, उस के प्रिंसिपल ने इसे आगे पढ़ने के लिए आप के स्कूल में भेजा है, क्योंकि ये अपने स्कूल का सब से प्रतिभाशाली बच्चा था.''

बच्चों ने ताली बजा कर उस का स्वागत किया.

नन्हे प्रकाश के चेहरे पर मुसकान तैरने लगी. रीटा मैम के साथसाथ क्लास टीचर भी मुसकराने लगीं.

रीटा मैम बोलीं, ‘‘बच्चो, आप का यह साथी, ‘विशेष’ बच्चा है. यह बोल और सुन नहीं सकता, पर पढ़ाई में काफी होशियार है.’’

बच्चे आश्चर्य से कभी मैम को देखते तो कभी प्रकाश को.

‘‘मुझे खुशी हुई, जब आप लोगों ने ताली बजा कर अपने साथी का स्वागत किया. आप ने देखा होगा कि प्रकाश ने चाहे आप की ताली की आवाज न सुनी हो, पर उस के स्वागत का जो भाव आप का था वह प्रकाश तक पहुंच गया. मतलब प्रकाश आप के इशारों को समझेगा. मुझे उम्मीद है कि आप सब प्रकाश से दोस्ती करोगे.’’

‘‘यस मैम, हम प्रकाश से दोस्ती करेंगे,’’ क्लास के सभी छात्रों ने एकसाथ कहा.

रीटा मैम प्रकाश की ओर मुड़ीं और अपनी उंगली से क्लास में बैठे बच्चों की ओर इशारा किया. फिर अपनी दोनों हथेलियों को जोड़ कर हाथ हिलाया. प्रकाश के साथसाथ बच्चों को भी दोस्ती का यह इशारा समझ आ रहा था.

प्रकाश ने अपने दाहिने हाथ का अंगूठा ऊपर उठाया और मुसकरा कर सिर हिलाया.

रीटा मैम फिर से क्लास की तरफ मुड़ीं और बोलीं, ‘‘बच्चो, प्रकाश इशारों के अतिरिक्त आप के होंठों के हिलने से भी आप की बात समझ सकता है.’’

बच्चे आंखें फाड़े प्रिंसिपल मैम को देख रहे थे.

‘‘बच्चो, क्लास की प्रथम पंक्ति में बैठे छात्रों से अनुरोध है कि आप में से कोई एक स्टूडेंट अपनी सीट प्रकाश को दे दे, क्योंकि आगे की सीट से प्रकाश को टीचर के बोलने पर उन के होंठों को देखना और समझना आसान होगा,’’ अब प्रिंसिपल मैम आगे बैठे बच्चों को देख रही थीं.

‘‘मैम, मैं पीछे चली जाऊंगी,’’ रोली खड़ी हो कर बोली.

‘‘थैंक्यू बेटा, एकदूसरे की मदद करना बहुत अच्छी बात,’’ रीटा मैम खुश हो कर बोलीं.

प्रकाश को प्रथम पंक्ति में बैठा कर रीटा मैम चली गईं और अंजलि मैम पढ़ाने लगीं.

भोजनावकाश यानी कि लंचब्रैक की घंटी बजते ही बच्चे टिफिन उठा कर बाहर भागे. उन में से कुछ कौतुहलवश प्रकाश के पास आ कर खड़े हो गए. प्रकाश ने मुसकरा कर सब की ओर देखा.

''तुम क्या वास्तव में बिलकुल नहीं सुन सकते?'' मोहित ने पूछा.

''प्रकाश अपना हाथ कान के पास ले गया और सिर हिलाने लगा.

''ओह,'' मोहित बोला.

प्रकाश मोहित को एकटक देख रहा था.

रोली अपना टिफिन पकड़ कर खड़ी थी. उस ने टिफिन की तरफ इशारा किया और पूछा, ''प्रकाश, आप का टिफिन कहां है?''

प्रकाश मुसकराया और उस ने अपने बैग से टिफिन निकाल कर उसे दिखाया. फिर दोनों मुसकरा दिए.

रोली ने उसे ग्राउंड में आने का इशारा किया.

मोहित यह देख कर हैरान रह गया कि प्रकाश सबकुछ समझता है.

उन का 4-5 बच्चों का एक ग्रुप बाहर गया और लंच करने एक पेड़ के नीचे बैठ गए. सभी मिलजुल कर खाना खा रहे थे. प्रकाश खुश था. खाना खाने के बाद वे अपनी क्लास की तरफ चलने लगे. क्लासरूम के बाहर तपन ने प्रकाश का हाथ पकड़ा और उसे बाहर ले गया. लंचब्रैक खत्म हो चुका था, बच्चे अपनी क्लास में लौट आए थे, लेकिन तपन, प्रकाश और योगेश नहीं आए थे. बच्चों ने क्लास से बाहर देखा.

सिंह सर ने प्रकाश को तपन और योगेश के साथ बाहर जाते हुए देखा था. वे जानते थे कि ये क्लास के सब से शरारती बच्चे थे. इसलिए उन्होंने इन का पीछा किया और उन्हें दूर से ही देखते रहे.

तपन और योगेश प्रकाश को प्लेग्राउंड में एक बड़े से नीम के पेड़ के नीचे ले गए और उन्होंने उसे छेड़ना शुरू कर दिया. वे उस की विकलांगता का मजाक उड़ाने लगे. खुद को असहाय महसूस कर प्रकाश रोने लगा.

सिंह सर ने देखा और क्लास की ओर चल दिए. उन्होंने तपन और योगेश को बिना दंड दिए एक सबक सिखाने का फैसला किया. क्लास में वापस जाते हुए सिंह सर ने माली से मुलाकात की, जो बगीचे के फूलों की देखभाल कर रहा था. उन्होंने उसे फूलों के दो अलगअलग गुलदस्ते लाने के लिए कहा और क्लास में चले गए.

तुरंत प्रकाश ने तपन और योगेश के साथ क्लासरूम में प्रवेश किया. प्रकाश की आंखें गीली थीं.

सिंह सर ने धीरे से कहा, ''बैठ जाओ प्रकाश,'' और इशारे में अपना सिर हिलाया. प्रकाश के बैठने के बाद उन्होंने जोर से कहा, ''तपन और योगेश खड़े हो जाओ.''

''सर, हमें माफ कर दो.''

सर गुस्से में बोले, ''मैं आज तुम दोनों के बुरे व्यवहार से बहुत दुखी हूं.''

''माफ कीजिए सर,'' दोनों ने दोहराया.

''हां, आप को दुख हो रहा होगा,'' सर ने कड़क आवाज में कहा.

जब दोनों अपनी डैस्क के पास खड़े थे, माली अपने हाथों में दो अलगअलग किस्म के गुलदस्ते पकड़े हुए अंदर आया. सर ने क्लास के सभी बच्चों को एक गुलदस्ता दिखाया और पूछा, ''यह क्या है?''

हैरान छात्रों ने जवाब दिया, ''सर, यह फूलों का गुलदस्ता है.''

''बिलकुल सही, इस गुलदस्ते में कौन से फूल हैं?''

''मैरीगोल्ड सर,'' बच्चों ने उत्तर दिया.

''क्या यह सुंदर नहीं है?''

''जी सर.''

''अब मुझे बताओ कि यह क्या है?'' सर ने दूसरा गुलदस्ता हाथ में लेते हुए कहा.

''सर, यह भी एक गुलदस्ता है,'' सभी छात्रों ने एकसाथ कहा. उन्हें लग रहा था कि वे उन से मजाक कर रहे हैं.

''इस गुलदस्ते में कौन से फूल हैं?'' सर ने फिर पूछा.

मोहित ने उत्तर दिया, ''इस में कई तरह के फूल हैं.''

''बिलकुल सही मोहित.''

''अब यह बताओ कि दोनों में से कौन सा गुलदस्ता ज्यादा खूबसूरत है?'' दोनों गुलदस्ते को हाथ में लेते हुए सर ने कहा.

''वह गुलदस्ता में बहुत से फूल हैं,'' रोली ने उत्तर दिया.

''हां सर, जिस में अलग किस्म के फूल हैं, वह सब से ज्यादा खूबसूरत है,'' मोहन ने भी कहा.

''बाकी छात्र क्या सोचते हैं?'' सर ने पूछा.

''यह गुलदस्ता जिस में अलगअलग तरह के फूल हैं सर.''

''आप लोग एकदम सही हो,'' सर ने सब बच्चों की तरफ देखा और कहा, ''जैसे अलगअलग रंग के फूल गुलदस्ते की खूबसूरती बढ़ाते हैं, इसी तरह अलगअलग गुण इस दुनिया को खूबसूरत बनाते हैं, हम सभी में कुछ बुरे और कुछ अच्छे गुण होते हैं जो हमें संपूर्ण बनाते हैं. इसलिए हमें अपने दोस्तों के बुरे गुणों की अनदेखी नहीं करनी चाहिए और उन के गुणों को अपनाना चाहिए. आप का दोस्त प्रकाश अपने स्कूल का टौपर था. उस के अच्छे गुणों को देखो. उस ने अपनी विकलांगता पर जीत हासिल की और विजयी बना. हम सब को उस से प्रेरणा लेनी चाहिए.''

''जी सर,'' सब बच्चों ने एकस्वर में कहा. पीछे से एक ने अपना हाथ उठाया.

''हां, इला. क्या आप कुछ पूछना चाहती हैं?''

इला ने कहा, ''हां सर, 8वीं में पढ़ने वाले विवेक भैया ठीक से चल नहीं पाते हैं, लेकिन उन की बड़ी मधुर आवाज है.''

''आप बिलकुल सही हैं, इला. विवेक के गायन के बिना स्कूल का कोई भी समारोह अधूरा है.'' उन्होंने कुछ देर रुक कर कहा, ''क्या आप जानते हो कि पारुल नाम की एक टैनिस खिलाड़ी है, जो न तो बोल सकती है और न ही सुन सकती है. फिर भी अपने खेल के दम से उस ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत को गौरवान्वित किया. वह हम सभी के लिए हीरो है.''

तभी घंटी बजी और सर क्लास से बाहर चले गए. तपन और योगेश ने प्रकाश से माफी मांगने में कोई कसर नहीं छोड़ी.

''प्रकाश, हमें माफ करना. हम से गलती हो गई,'' इतना कह कर उन्होंने अपने कान पकड़ लिए.

प्रकाश जल्दी से खड़ा हुआ और उस ने दोस्ती करने के लिए इशारे में उन की तरफ हाथ बढ़ाया. सब लोग मुसकरा दिए. ●

जोड़ा ढूंढ़ें

नीचे के चित्र में कछुओं के 10 जोड़े हैं. उन्हें ढूंढ़ें.

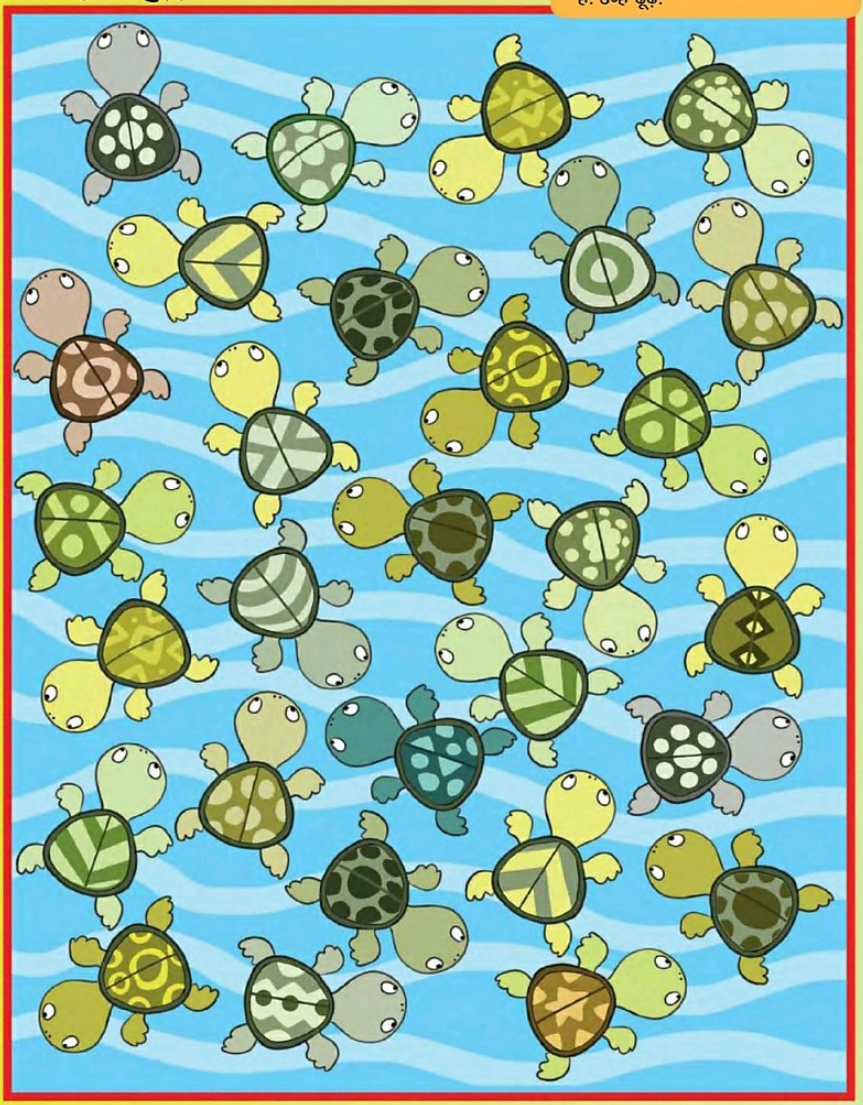

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

इस चित्र में कुछ हिस्से खाली रह गए हैं. चित्र को देखें, उन्हें पूरा करें और फिर इन में रंग भरें.

चित्र पूरा करें

याददाश्त बढ़ाएं

8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है. नीचे के चित्र को देखें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें.

प्र.1. प्रसिद्ध महिला का नाम बताएं जिस ने शिक्षा के लिए लड़ाई लड़ी.
प्र.2. स्पोर्ट्स आइकन की पहचान करें.
प्र.3. ग्रेटा थनबर्ग के पोस्टर को ले कर छात्र किस वैश्विक मुद्दे के लिए आंदोलन कर रहे हैं.
प्र.4. अंतरिक्ष में जाने वाली प्रथम भारतीय महिला कौन थी?

दादाजी और विश्व वन्यजीव दिवस

कहानी ● विवेक चक्रवर्ती

रिया और राहुल दादाजी के साथ टीवी देख रहे थे.

वह कौन सा पक्षी है?

रिया, वह डोडो है.

डोडो? दादाजी, हम ने पहले कभी इस तरह का पक्षी नहीं देखा है.

क्योंकि यह अब विलुप्त हो चुका है.

विलुप्त हो चुका है? क्या मतलब दादाजी, क्या यह पक्षी डायनासौर काल का है और उस की तरह विलुप्त हो कर समाप्त हो चुका है?

नहीं, डायनासौर के अंत का कारण प्राकृतिक था, लेकिन डोडो के अंत का कारण हम मनुष्य हैं.

हम मनुष्य? क्या मतलब?

हां, डोडो एक ऐसा पक्षी था जो उड़ नहीं सकता था और आसानी से उस का शिकार कर लिया जाता था. यही उस के समाप्त होने का कारण है.

दादाजी, इन पक्षियों को बचाने के लिए कुछ किया जाना चाहिए. है न?

हां, रिया. डोडो की तरह ही बहुत से पशु और पेड़पौधे समाप्ति की कगार पर हैं, क्योंकि उन की सुरक्षा के लिए आवश्यक कदम नहीं उठाए गए हैं. जल्दी ही हजारों की संख्या में जानवरों और पेड़ों की प्रजातियां पूरी दुनिया से समाप्त हो जाएंगी.

'इसी वजह से 20 दिसंबर 2013' में संयुक्त राष्ट्रसंघ ने फैसला किया था कि 3 मार्च को विश्व वन्यजीव दिवस के रूप में मनाया जाएगा. यह दिवस विश्व के वन्यजीवों और पेड़पौधों की प्रजातियों की रक्षा के लिए जागरूकता पैदा करता है.

लेकिन दादाजी, अब भी लोग पेड़ों को क्यों काटते हैं और वन्यजीवों का शिकार क्यों करते हैं?
SONAL
हमारी जनसंख्या बढ़ रही है और हम ज्यादा से ज्यादा घर बनाने, उद्योगधंधे लगाने के लिए पेड़ों को काट रहे हैं. हम अपना खाना और पोशाक की जरूरतों को पूरा करने के लिए जानवरों का शिकार भी कर रहे हैं. इस तरीके से हम जानवरों और पेड़पौधों के प्राकृतिक निवास को समाप्त कर रहे हैं.
और यदि जानवर और पेड़पौधे नहीं होंगे तो हम भी विलुप्त हो जाएंगे, क्योंकि हमारे आसपास के जीवजंतु और पेड़पौधों की वजह से ही इस धरती पर हमारा अस्तित्व निर्भर करता है.
बिलकुल सही. अगर लोग जागरूक हो जाएं और सभी लोग सामूहिक रूप से प्रयास करें तो जीवजंतु और पेड़पौधे विलुप्त नहीं होंगे.
उन की बातों को सुनने के बाद दादाजी ने सहमति में अपना सिर हिलाया.

नन्ही कलम से

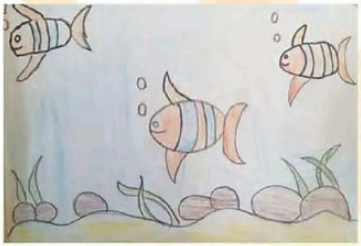

श्रेयांश ध्यानी, 6 वर्ष
देहरादून

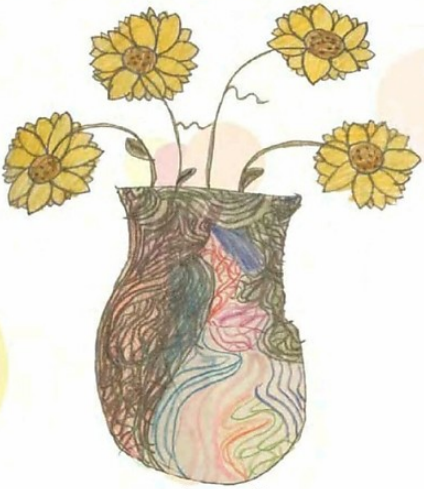

शायना बेकल, 7 वर्ष
यूएसए

मातृत्व

मम्मी, आप मेरे जीवन का प्रकाश हैं. आप वह पूर्ण व्यक्ति हैं जो मेरे बारे में सबकुछ जानता है. अंधेरे में आप मेरी मदद करती हैं और अपने चमकदार सुनहरे प्रकाश की छत्रछाया में मेरा मार्गदर्शन करती हैं. कृपया आप मेरे साथ हमेशा रहना और मेरी मदद करना. मैं जब उदास हो जाऊं तो मुझे अपने गले लगा लेना और जब खुश होऊं तो मेरे संग आप भी खुश हो जाना. आप को सबकुछ पता है कि मेरे लिए हमेशा अच्छा क्या है. इसलिए ऐसा कोई भी नहीं है जो हमारे बीच के खास बंधन को तोड़ सकेगा. आप के मातृत्व और ममत्व को रोक सकेगा.

आर सहाना, 11 वर्ष
चेन्नई

वसंत का मौसम

मनोरंजन और मौज के साथ सूर्य पृथ्वी के सब से निकट होता है. तापमान अपने चरम पर होता है. सूरज काफी तेज, उज्ज्वल होता है और तेज चमक रहा होता है. दिन लंबे होते हैं और हवाएं गरम होती हैं. रातें छोटी होती हैं और थोड़ी सी हलकी हवाएं बहती हैं. आइसक्रीम ने हमें अचंभे में डाल दिया है. गरमी को दूर भगाने के लिए ठंडा पानी पीएं. मुसकराते हुए दृढ़ निश्चय से दिल थाम लें. सिर्फ सोच कर रह जाने की बात नहीं है कि ये तो गर्मियों के दिन हैं. जितनी बार जरूरत हो उतनी बार स्नान करें. होमवर्क तो एक आकस्मिक दिनचर्या है. समुद्रतट की यात्रा में हमेशा बहुत मजा आता है. बेसबौल के साथ और अन्य खेल जहां हम खूब दौड़ते और खेलते हैं.

लोना शर्मा, 14 वर्ष
बुलंदशहर

वीर्थ सुदीप, 7 वर्ष
बैंगलुरु

स्कूल के सनसनीखेज दिन

जहां सबकुछ व्यवस्थित और अनुशासित है, जहां गणितज्ञ सोचते और वैज्ञानिक मुसकराते हैं, ये शानदार नियम के दिन, स्कूल के दिनों के अलावा और कुछ नहीं हैं. जहां हम जिज्ञासा की दुनिया में खो जाते हैं. जहां हम समुद्री जीवन, समीकरण और दुनिया के नक्शे देखते हैं, जितना ज्यादा हम सीखते हैं, उतना ज्यादा हम आगे बढ़ते चले जाते हैं और एक के बाद एक किताब को पढ़ते चले जाने से उन में डूबते चले जाते हैं. टीचर्स और दोस्तों के साथ हम उस यात्रा को करते हैं, जो कभी समाप्त नहीं होती है. अक्षांश और देशांतर से होते हुए, तेज दिमाग और अच्छे नजरिए के साथ सभी गणित के रहस्यों को हल करते हैं. इतिहास में कभीकभी हम रौयल्टी यानी शाही लोगों से मिलते हैं. जहां नैतिक मूल्य लागू होते हैं. अनुशासन और टीमवर्क की कला की आपूर्ति की जाती दिखाई देती है. ये हैं सनसनीखेज स्कूल के दिन, जो हमें एक नहीं बल्कि कई तरीके सिखाते हैं.

अनुशा शुक्ला, 11 वर्ष, जबलपुर

समिक्षा राजेश, 10 वर्ष
बैंगलुरु

आरोही वैद्य, 12 वर्ष, हरियाणा

नदी

यहां नदी आती है, तो उसे बुखार हो जाता है. नदी बहुत उदास है, क्योंकि लोग उस के साथ बहुत गलत व्यवहार करते हैं. कचरे और प्रदूषण के लिए समाधान निकालने से लोगों ने इनकार कर दिया है. समुद्री जीवजंतु मर रहे हैं, क्योंकि कूड़ेकचरे के ढेर लगते जा रहे हैं.

आन्वि पंतबालेकुंडरी, 10 वर्ष
बैंगलुरु

यह एक पाइनऐप्पल है, जिसे हमारी 6 वर्षीय पाठिका श्रेयांश ध्यानी ने देहरादून से बना कर भेजा है.

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:

चंपक, दिल्ली प्रैस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई- 400031

writetochampak@delhipress.in 9619587613

www.facebook.com/ChampakMagazine

http://www.youtube.com/ChampakSciQ

हम आप की सामग्री लौटा नहीं सकते इसलिए हमें भेजी सामग्री की कापी अपने पास रखें.

अंतर बताओ

यहां 10 गलतियां हैं. आप उन गलतियों को ढूंढ़ कर बताएं.

हमारी और उन की गरमी

जल्द ही गरमी का मौसम आने वाला है. जब तापमान बढ़ जाता है तब हम खुद को ठंडा करने के लिए कोल्डड्रिंक्स और आइसक्रीम का रुख करते हैं, लेकिन शौवेल स्नाउटेड लिजार्ड (छिपकली जिस का थूथन फावड़े की तरह है) के पास खुद को ठंडा करने लिए एक अजूबा तरीका है. जब मौसम बहुत गर्म हो जाता है, तो यह नाचने लगती है.

शौवेल स्नाउटेड लिजार्ड यानी फावड़ा थूथन छिपकली उत्तरी अफ्रीका के सहारा मरुस्थल में पाया जाता है जो विश्व का तीसरा सब से बड़ा रेगिस्तान है. जब रेत बहुत गर्म हो जाती है तो छिपकली खुद को अपनी पूंछ पर संतुलित करती है और एक ही समय में अपने दो पैर उठा लेती है. बाईं और दाईं ओर के पैरों को बारीबारी से 10 सैकंड तक वह उठाती रहती है. अपने पैरों को ठंडा रखने के लिए वह ऐसा करती है. जब वह ऐसा करती है, तो लगता है जैसे यह नृत्य यानी डांस कर रही हो. यह रेत का फायदा खुद को छिपाने और किसी हिंसक शिकारी से बचने में भी करती है. जब छिपकली शिकारी को देखती है, तो यह गोता लगाती है और खुद को रेत में दबा लेती है. यह रेत की एक परत के नीचे छिपी रहती है और केवल अपने सिर को बाहर निकालती है. ऐसा ही वह तब करती है जब वह शिकार करती है. छिपकली अपने शिकार को जल्दी से रेत के नीचे से ऊपर आ कर और इसे दबोच कर हैरान कर देती है. यह आमतौर पर भृंग, कीट और मकड़ियों जैसे छोटे कीड़े खाती है.

शौवेल स्नाउटेड लिजार्ड एक दिन के लिए रेत में गहरे दफन रह सकती हैं.

गलत को बताएं

इस चित्र में कुछ बातें ऐसी हैं जो सही नहीं हैं, उन्हें ढूंढ़ें.

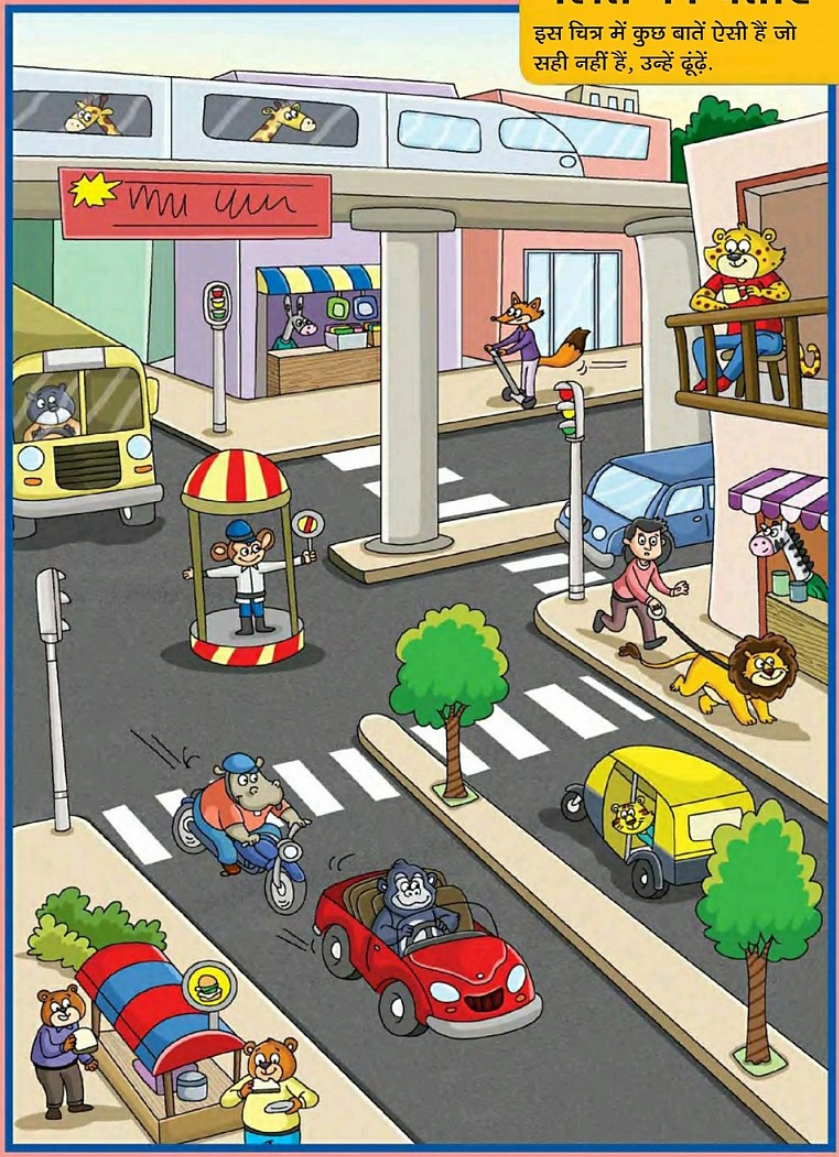

तबाही का मतलब है, डोडो

कहानी ● एस. वरालक्ष्मी

डोडो गधा वास्तव में एक गधा ही था. यह एक ऐसा समय था जब उस के सभी दोस्त काम में व्यस्त थे. चूंकि वही अकेला बिना नौकरी के था, इसलिए वह बेचैन था और ऊब गया था.

पिंकी खरगोश ने उसे कहीं नौकरी करने की सलाह दी, उस ने सोचा यह तो बहुत अच्छा विचार था. इसलिए उस ने एक दुकान में नौकरी कर ली जहां गिफ्ट बेचे जाते थे.

पहले दिन उस के मालिक पौप्पिन जिराफ ने उसे निर्देश दिया, ''डोडो, मैं बाहर जा रहा हूं. दुकान का खयाल रखना. याद रखना कि किसी परिस्थिति में ग्राहक के साथ तूतूमैंमैं न हो. वे हमेशा सही होते हैं. व्यापार का यही नियम है. ओके?''

डोडो ने मुसकराते हुए अपना सिर हिला दिया. उस के बाद पौप्पिन चला गया.

जल्दी ही बोनी भालू दुकान में घुस आया और

इधरउधर देखने लगा. उस ने एक कांच का फूलदान उठा लिया और उस का निरीक्षण करने लगा. दुर्भाग्य से यह उस के हाथ से फिसल गया और फर्श पर गिर कर चकनाचूर हो गया.

डोडो उस की ओर दौड़ा और फूलदान के लिए मुआवजे की मांग करने लगा.

बोनी चिल्लाया, ''यह मेरा अपमान है. तुम्हारा क्या मतलब है, मैं इसे तोड़ दूंगा? यह मेरी गलती नहीं है. तुम ने फूलदान किनारे पर रखा था और यह नीचे गिर गया.''

डोडो आगे बहस करना चाहता था, लेकिन फिर उसे अपने बौस के ग्राहकों के सही होने के निर्देशों की याद आ गई.

इस के बजाय वह मुसकराया और शांति से बोला, ''कोई बात नहीं सर. सबकुछ ठीक है. आप जा सकते हैं.''

बौनी के जाने के बाद पौप्पिन अंदर आया और फूलदान के टुकड़ों को देख कर उसे जोर का झटका लगा. वह चिल्लाया, ''इस कीमती फूलदान को किस ने तोड़ दिया?''

डोडो ने जवाब दिया, ''एक ग्राहक ने.''

चिंतित हो कर पौप्पिन ने पूछा, ''ठीक है. मुझे उम्मीद है, तुम ने इस के लिए उस से मुआवजा ले लिया होगा.''

डोडो ने सिर हिला कर जवाब दिया, ''नहीं, मालिक.''

गुस्से से बोनी ने पूछा, ''तुम्हारा क्या मतलब है?''

डोडो ने उस के बाद पूरी घटना सुना दी और गर्व से कहा कि उस ने पौप्पिन की सलाह का अक्षरशः पालन किया था.

पौप्पिन को अपने जीवन का जबरदस्त सदमा लगा और उस ने उसे तुरंत काम से निकाल दिया.

डोडो ने दुकान पर काम करना छोड़ दिया. उसे अपनेआप पर अफसोस महसूस हुआ. वह अब भी यह नहीं समझ पा रहा था कि वह कहां गलत था.

उस ने अपनी व्यथा पिंकी खरगोश को सुनाई. ''अर...र... तुम्हें उस की सलाह को इतनी गंभीरता से नहीं लेना चाहिए था. लेकिन चिंता मत करो, तुम अगली बार बेहतर करोगे,'' पिंकी ने उस की भावनाओं को ठेस न पहुंचाने की कोशिश करते हुए कहा.

''अब मैं नौकरी के लिए क्या करूं?'' डोडो ने पूछा.

''हम्म....मुझे पता है, जुनजुन हिप्पो को अपनी ज्वैलरी शौप के लिए एक सेल्स असिस्टैंट की तलाश है. मैं उस से तुम्हारी सिफारिश कर दूंगी,'' पिंकी ने कहा.

डोडो खुशी से बोलो, ''तुम बहुत अच्छी हो, पिंकी. मैं तुम्हारा धन्यवाद किस मुंह से अदा करूं?''

''एक बढ़िया सेल्स असिस्टैंट बन कर,'' पिंकी ने मुसकराते हुए कहा.

बाद में जुनजुन की दुकान पर डोडो ने सेल्स असिस्टैंट का पदभार संभाल लिया. अब वह अपने बौस को अपने काम से प्रभावित करने के लिए तत्पर रहने लगा.

तभी मिस्टर और मिसेज रौजी लोमड़ी दुकान में आए और उन्होंने डोडो से संपर्क किया. उन्होंने एक हीरे का सेट खरीदने की अपनी इच्छा व्यक्त की.

मिसेज रोजी ने एक महंगी और बहुत ही सुंदर हीरे की अंगूठी उठा कर उसे दी, जिस के बीच में एक पीले रंग का पुखराज जड़ा हुआ था.

डोडो ने प्रसन्न हो कर पूछा, ''क्या आप को यह पसंद है, मैडम?''

मिसेज रोजी ने संदेह जताते हुए उत्तर दिया, ''यह बहुत अद्भुत है, लेकिन मुझे संदेह है कि यह बाहर धूप में कैसा दिखता होगा.''

मिसेज रोजी ने फिर डोडो से हिचकिचाते हुए पूछा, ''उह...क्या हम...''

उसे खुश करने की उत्सुकता में डोडो ने अपनी सहमति दे दे, ''हां, आप देख सकती हैं. कृपया आप बाहर जा कर देख लीजिए.''

उस के बाद यह जोड़ी दुकान से बाहर चली गई. तभी जुनजुन हिप्पो अपने कैशियर के कांउटर से डोडो के पास आया और उस ने उम्मीद से पूछा, ''हां, तो डोडो, उन्हें क्या चाहिए था?''

डोडो ने मुसकराते हुए कहा, ''मिसेज रोजी ने अपनी इच्छा व्यक्त की थी कि हीरे की अंगूठी बाहर दिखने में कैसा लगती है, तो मैं ने उन्हें सहमति दे दी.''

भयभीत और स्तब्ध जुनजुन चिल्लाया, ''अरे, बेवकूफ, उन्होंने तुम्हें ठग लिया है. मुझे पूरा यकीन है, वे अब तक कहीं दूर चले गए होंगे.''

अभी वह उन के पीछे जाने ही वाला था कि दरवाजा खुला और वह जोड़ा अंदर आया. जुनजुन ने राहत की सांस ली.

मिसेज रोजी उन की ओर घूमी और बोली, ''मुझे यह अंगूठी बहुत ही पसंद है. मैं पूरे सैट को ही खरीदना चाहती हूं.''

यह सुन कर जुनजुन को खुशी का एहसास हुआ. 'अगर यह बिक्री हो जाती है तो मैं एक ही बार में 10 लाख रुपए कमा कर अमीर बन जाऊंगा.'

उस ने डोडो की पीठ को थपथपाया और खुशी से कहा, ''मैं अपने शब्दों को वापस लेता हूं. वास्तव में तुम एक बेहतरीन सेल्स असिस्टैंट हो. मुझे तुम पर गर्व है. मैं यह देखूंगा कि तुम्हें इस के लिए तुम्हारे वेतन में बढ़ोतरी मिलेगी.''

एक खूबसूरत विला जिसे उस ने टीवी पर देखा था, के बारे में सोचते हुए उत्साह में उसे चक्कर आ गया. उसे इसे खरीदने की इच्छा हो रही थी.

मिस्टर और मिसेज रोजी लोमड़ी कुछ देर तक डोडो

के पास रहे और उस के बाद वे फिर से दुकान के बाहर चले गए.

उन्हें जाते हुए देख कर जुनजुन डोडो के पास आया और असमंजस में पूछा, ‘‘क्या हुआ? वे बाहर क्यों चले गए? उन्होंने सैट क्यों नहीं खरीदा?’’

डोडो ने बताया, ‘‘चिंता न करें मालिक, मिसेज रोजी ने फिर से यह देखने की इच्छा की थी कि खरीदने से पहले पूरा सैट उन के ऊपर बाहर कैसा दिखता है.’’ जुनजुन अब थोड़ा परेशान दिख रहा था. अब उसे थोड़ी अनिश्चितता हुई, लेकिन डोडो के आश्वासन ने उसे कुछ हद तक शांत कर दिया था. उस ने डोडो पर भरोसा करने का फैसला किया, क्योंकि वह पहली बार सही था.

वे पहले कुछ देर तक उन के लौटने का इंतजार करते रहे, फिर चिंतित जुनजुन ने बाहर झांकने का निर्णय किया.

उसे जोर का सदमा लगा, बाहर वह जोड़ी कहीं भी दिखाई नहीं दे रही थी.

उन्होंने बड़ी चालाकी से डोडो और जुनजुन को ठगा और फरार हो गए थे.

‘‘डोडो,’’ जुनजुन की भयानक चीख पूरी सड़क पर गूंज उठी.

भयभीत डोडो दौड़ता हुआ बाहर आया और बोला, ‘‘क्या हुआ मालिक?’’ चारों ओर देखते हुए उस ने कहा, ‘‘वे कहां चले गए?’’

‘‘वे कहां हैं? तुम मुझ से पूछ रहे हो? तुम मुझे बताओ,’’ जुनजुन चीखने लगा.

अब बेचारा डोडो क्या करता, सिर्फ पलक ही तो झपका सकता था.

''मैं बरबाद हो गया हूं. वे 10 लाख के आभूषण ले कर भाग गए हैं, तुम जैसे गधे ने उन्हें इनाम में दे दिया इतना सबकुछ,'' जुनजुन चीखने के साथसाथ रोने लगा.

''मेरे पास एक सुझाव है, मैं उन्हें ट्रैस यानी ढूंढ़ने का एक तरीका जानता हूं,'' डोडो ने मुसकराते हुए कहा.

''कैसे?'' जुनजुन को कुछ उम्मीद जगी.

''पुलिस के पास शिकायत दर्ज कराएं और वे जरूर हमारी मदद करेंगे,'' डोडो ने खुशी से कहा. अपने गुस्से को दबाते हुए जुनजुन ने व्यंग से तंज कसते हुए कहा, ''महान विचार हैं, लेकिन ऐसा करने से पहले कुछ किया जाना जरूरी है.''

''क्या, मालिक? मुझे इनाम दोगे?'' उम्मीद के साथ डोडो ने पूछा.

जुनजुन पागलों की तरह चिल्लाने लगा, ''मैं अपनी तबाही के लिए तुम्हें इनाम दूं? तुम तबाही के अलावा कुछ भी नहीं हो. मैं खुद को जो एक सब से बढ़िया इनाम दे सकता हूं, वो है, तुम्हें नौकरी से निकाल देना. तुम सिर्फ और सिर्फ एक गधा हो. भाग जाओ, यहां से,'' जुनजुन सड़क की ओर इशारा करते हुए जोर से चिल्ला कर बोला. ●

उत्तर पृष्ठ :

पृष्ठ 19 : हिस्से को जोड़ें: 1-E, 2-I, 3-D, 4-H, 5-J, 6-G, 7-F, 8-A, 9-C, 10-B.

पृष्ठ 23 : रास्ता बताओ:

पृष्ठ 29 : बलूत ढूंढ़ें : :

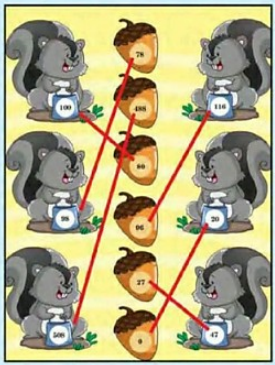

पृष्ठ 37 : जोड़ा ढूंढ़ें :

WE SPEAK IN 30 DIFFERENT CONSUMER VOICES.

BECAUSE EVERY BRAND IS UNIQUE.

With virtually every age group, income segment and language covering 30 million Indians, we are the most diverse magazine group in India. So next time you want to address anyone in India, you are better off speaking to the **Delhi Press** Group today.

DELHI PRESS

To subscribe to our magazines Call/SMS/WhatsApp: 08588843408,
E-mail: subscription@delhipress.in, You can also subscribe online at www.delhipress.in/subscribe

THE CARAVAN CHAMPAK सरिता गृहशोभा चंपक मुक्ता सरस सलिल फार्मफूड सत्यकथा मनोहर कहानियां
ગૃહશોભા चंपक सरस सलिल गृहशोभा चंपक सरस सलिल गृहशोभा ಚಂಪಕ ಕುಂಕುಮ ಚಂಪಕ ಸಾರಲ್ ಗೃಹಶೋಭಾ ಚಿಂಪರೆ
ಗೃಹಶೋಭಾ ಗೃಹಶೋಭಾ ಚಂಪಕ್ ಸಲಿಲ್ ಚಂಪಕ್ Highlights CHAMPAK Highlights Comics MOTORING

(REGISTERED) RNI 16420/68 DL(C)-14/1093/2021-23 WPP U(C)148/40/2021-23 P.O. SRT Nagar, ND-55 Posting Dt. 02 to 08 Published on 26/02/2021. Pgs. 52

PARLE

MAKE THE GOODNESS OF MILK YOUR SUPERPOWER.

PARLE Milk Shakti

Enriched with 7 Vitamins 2 Minerals

ENRICHED WITH 7 VITAMINS 2 MINERALS